दीवाना

अंक : १५ वर्ष : १७, १ अगस्त १९८१

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१८ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

मुख्य पृष्ठ पर

सड़क के बीच में लाईन लगाओ
काम मिला यह चिल्ली को
शुरू हुआ जब गुड़गांव से
आना था उसे दिल्ली को ।
बीच रास्ते मिल गई उसे
बैठी गाय टांग पसारे
लाख यत्न कर, नहीं उठी जब
लाईन लगादी बदन पर सारे ॥

आगामी अंक में

अगर मनुष्य घौंसलों में रहता

नामी चोर

मुफ्त पोस्टर — मिक्की माऊस

आपके पत्र

दीवाना का नया अंक 10 मिला। पढ़कर दिल खुशी से झूम उठा। भ्रांति फिल्म दीवाना में देखी, बहुत पसन्द आई हालांकि इस फिल्म से मैं पर्दे पर अधिक प्रभावित नहीं हुआ था। मुख्य पृष्ठ पर चिल्ली की नयी लीला भी बहुत अच्छी लगी, देख कर हंसते-हंसते आंखों में आंसू आ गये।

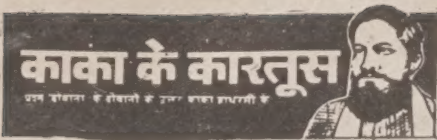
काका के कारतूस, गरीब चंद की डाक में सवाल बहुत रोचक लगे। कुल मिला कर यह अंक इतना अच्छा लगा कि जितनी तारीफ करूं थोड़ी है। मेरी नजर में दीवाना पत्रिका श्रेष्ठ हास्य पत्रिका है। दीवाना को समय पर निकालने की ओर ध्यान दें। दीवाना की सफलता की कामना करते हुए। **तिलकराज, अरोड़ा खुरजा**

दीवाना जितनी बार आता है उतनी बार आपको प्रशंसा के पत्र लिखता रहूंगा, हाथ ऐसे मजबूत हो जायेंगे की जूडो करांटे सीखने के लिए अभ्यास की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हमारे बुक स्टाल पर दीवाना काफी देर से पहुंचता है। इससे अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

कृपया दीवाना में पहेली, गलती ढूंढ़िये आदि दिमागी कसरत अवश्य दिया करें। एक बात और क्या वर्ग पहेली सादे कागज पर स्वीकार की जाती है अन्यथा नहीं कृपया उत्तर दें।

योगेन्द्र बहादुर कायष्ठ, नेपाल

वर्ग पहेली सादे कागज पर स्वीकार नहीं की जाती। **सं०**



दयाशंकर, कश्मीरीगेट, दिल्ली

प्र. काकाजी, यह बताइए कि "वाइफ़ इज़ लाइफ" ठीक बात है ?

उ. नई कहावत सीखिए, छोड़ पुराने ढंग ।
'वाइफ इज़ नाइफ' समझ चलो समय के संग ।।

कु. सौरभ सुशील, खगड़िया

प्र. अगर आपको कहीं पर दो औरतें चुपचाप बैठी हुई मिल जाएं तो, क्या कहेंगे ?

उ. ऐसा सम्भव ही नहीं,
गप्प उड़ाते आप ।
गूंगी होंगी औरतें,
जो बैठीं चुपचाप ।।

गुलशन कुमार, निकट कोतवाली भरतपुर

प्र. निमंत्रण देने पर भी आप यहां नहीं आए, क्या कवि सम्मेलनों से संन्यास ले लिया है ?

उ. जब तक तन में सांस हैं,
तब तक मन में आस ।
मोरारजी के साथ ही,
लेंगे हम संन्यास

रवि राजू टंडन फतेहपुर (उ. प्र.)

प्र. आजकल दाढ़ी-मूंछों के अलग-अलग स्टाइल चल रहे हैं आपकी दाढ़ी का कौन सा स्टाइल है ?

उ. अपना स्टाइल अलग,
रखते हैं हम आप ।
नकल नहीं यह किसी की,
दाढ़ी 'काका छाप' ।।

गिरीश चन्द्र अग्रवाल विदिशा (म. प्र.)

प्र. आप एक बार विदिशा आए थे, हमसे क्यों नहीं मिले ?

उ. जिसने हमको बुलाया,
रहे उसी के साथ ।
आप बुलाएंगे तभी,
मिले आपसे हाथ ।।

राजेश वर्मा, सरोजनीनगर, नई दिल्ली

प्र. दुख प्रकट करने को, आंसू बहाना जरूरी है क्या ?

उ. आकुल व्याकुल होय तब,
मानव मनवां रोय ।
थोड़ा दुख बहजाय तो,
हियरा हलका होय ।।

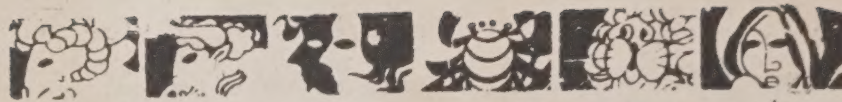
मंगलसिंह टांक, दीवाना फ्रैंडस क्लब, जीन्द

प्र. जब गरीबों के आंसू पोंछने वाला कोई न रहे तो ?

उ. अश्रु बहाते जिस समय,
दीन-हीन असहाय ।
शासक उनको पिलाते,
आश्वासन की चाय ।।

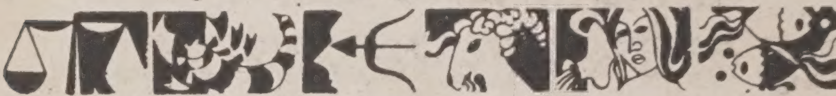
काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२.


होंगे बच्चे स्वस्थ
फलें फूलेगा बचपन
इन्हें पिलाओ....
मुग़ली घुट्टी 555
अ हा...! मीठी-मीठी
पुष्ट व सदा निरोगी रखने के लिए पाँच वर्ष की आयु तक दैनिक प्रयोग कराइए बच्चों को स्वस्थ बनाइए
अनेकों माता-पिता द्वारा प्रशंसित.....
MUGLI JANAM GHUTTI 555®
No 555
SRIRAM AYURVED BHAWAN
E-88 NAVIN SHAHDARA DELHI 110032
श्रीराम आयुर्वेद भवन दिल्ली-110032



आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



मेष : मनोरंजन आदि पर खर्च हालात प्राय: ठीक ही चलेंगे, दिन ठीक नहीं, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, यात्रा छोड़ दें, शत्रु से बचें, आय-यथार्थ, कारोबार सुधरेगा, यात्रा में सुख।

वृष : लाभ अच्छा, कामों में व्यस्तता काफी रहेगी, कारोबार पहले जैसा ही चलेगा, हालात सुधरेंगे, यात्रा सफल, आर्थिक दशा अनुकूल रहेगी, परेशानी बिना कारण ही रहेगी।

मिथुन : लाभ अच्छा पर मिलेगा देर से, व्यय बढ़ेगा, कुछ अधूरे काम पूरे होंगे, आय में भी वृद्धि और कामों में दिलचस्पी बढ़ेगी, मित्रों से सहयोग, संघर्ष काफी रहेगा, स्वभाव में गुस्सा।

कर्क : विरोधी पक्ष से बचें, कामों में अड़चन आयेंगी, कारोबार सुधरेगा और लाभ भी समय पर मिलता रहेगा, आय में वृद्धि कोई विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा छोड़ दें या सतर्क रहें।

सिंह : हालात पहले जैसे हो चलेंगे, मनोरंजन पर व्यय, काम समय पर न बन पाएंगे, अड़चनें काफी आयेंगी, लाभ भी देर से मिलेगा, कामकाज का बोझ बढ़ेगा, लाभ अच्छा होगा।

कन्या : नातिदारों से मेल जोल, समय हंसी खुशी से व्यतीत होगा आर्थिक चिन्ता, व्यर्थ के झगड़ों से परेशानी, यात्रा सफल रहेगी, भाईयों से सहयोग, कामकाज अधिक, यात्रा न करें।

तुला : कारोबार बढ़ेगा, आर्थिक लाभ देर से मिलेगा, कामों में व्यस्तता काफी रहेगी, लाभ अच्छा होगा, सुस्ती या थकावट का प्रभाव रहेगा, सरकारी कामों में सफलता।

वृश्चिक : कारोबार बढ़ेगा, आर्थिक लाभ देर से मिलेगा, कामों में व्यस्तता काफी रहेगी, लाभ अच्छा होगा, सुस्ती या थकावट का प्रभाव रहेगा, सरकारी कामों में सफलता, यात्रा सफल।

धनु : यात्रा सफल रहेगी, व्यय अधिक, संघर्षमय हालात का सामना, परिश्रम करने पर कुछ अधूरे काम पूरे होंगे, लाभ में वृद्धि, यात्रा सावधानी से करें।

मकर : काम बनते रहेंगे, मनोरंजन आदि पर व्यय, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, यात्रा सफल, लाभ यथार्थ, व्यय अधिक, सुस्ती छाई रहेगी, विरोधी अकारण ही बनेंगे।

कुम्भ : रुकावटें काफी आयेंगी, यात्रा सफल रहेगी, सुस्ती का प्रभाव रहेगा, संघर्ष भी काफी करना पड़ेगा, भाइयों की मदद से सफलता मिलती रहेगी, यात्रा सफल।

मीन : हालात सुधरेंगे, कोई विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा आसपास की, अफसरों से मेलजोल, रुका काम बन जाएगा, मनोरंजन आदि पर व्यय, समय अच्छा गुजरेगा।

सरौता सिंह

शिशिर विक्रांत

बाबू भगंदर प्रसाद सिंह का नाम सरौता सिंह क्यों पड़ गया? इसके विषय में लोग अनेक प्रकार की अटकलें लगाते हैं। कुछ का मत है कि भगंदर प्रसाद का डील-डौल यानी पतले-पतले टेढ़े आकार के पैर और छोटे व कमजोर हाथों के ऊपर जरा-सा भी प्रकाश उठने वाली, चिकनी-घुटी चांद आदि के कारण सरौते से बहुत कुछ समानता रखने के कारण ही उनका यह नामकरण हुआ है। पर कुछ बुजुर्ग और बुद्धिमान लोगों का कहना है कि बाबू भगंदर प्रसाद प्रत्येक आदमी की किसी भी टापिक पर होने वाली बात को फटाक से काटकर, चूंकि अपनी बात कहने लग जाते हैं. इसी कारण सुपारी को कतरा-कतरा काट देने वाले सरौते के नाम पर ही, उनके किसी प्रिय दोस्त ने प्यार या गुस्से में उनको यह नाम दिया है।

. बहरहाल कारण चाहें कुछ भी हो, उनके इस नाम संबोधन का, मोहल्ले में तथा दोस्त-यारों में बाबू भगंदर जो, सरौता सिंह के नाम से ही विख्यात हैं। बहुत से लोग तो उनका वास्तविक नाम भी सरौता सिंह ही जानते हैं। और ऐसे ही लोगों में से जब कोई उनसे, उनके इस बेहूदे नाम रखने का कारण पूछ बैठता है तो सरौता सिंह जी अपने पाव-पाव भर के हाथ-पैरों को गुस्से में आग-बबूला होकर दंगल में लड़ाई के लिए उतरे हुए किसी ताकतवर पहलवान की ही तरह झटक-झटक कर कहना शुरू कर देते हैं, 'सवा सत्यानाश हो लोगों का जो तुम लोग भी मेरा नाम होने का यकीन करते हो बेलनों, मेरा शुद्ध, शत-प्रतिशत शु तो भगंदर प्रसाद सिंह वल्द छ प्रसाद सिंह है :' फिर एकाएक भूलते हुए स्पंज की तरह नम्र व्यथापूर्ण शब्दों में शुरू हो जाते हैं

'पर तुम लोगों की भी भला गलती? जब सभी लोग यहां त श्रीमती जी भी प्यार से इसी नाम पुकारती हैं। और तो और बेटा भी का नाम श्री भगंदर प्रसाद जी जगह सरौता सिंह ही स्कूल में आया है।' 'पर कोई न कोई तो क होगा ही इस नाम का…?' यदि इस प्रश्न को फिर भी कर ही देता वह अतीत में खोते हुए बताने लगते

'दरअसल, हुआ यह कि मेरा जिगरी यार है छक्का लाल, अब तो क्रिकेट में छक्के लगाते-लगाते एक के बुलाए जाने पर कई सालों से ब नगरी में रह रहा है, 'पर तब वह रहता था, हम दोनों की दांत काटी की यारी थी। पर वह मुझसे एक ब पर अक्सर खफा हो जाता था औ कारण था, मेरे द्वारा उसकी हर को काटा जाना।'

कुछ मुस्कराहट के साथ सरौता जी आगे कहते हैं, 'इसी वजह से मुझे हमेशा 'बोर' करने की फिरा रहता था। ऐसे ही एक दिन छक्का मुझसे बोला, 'यार भगंदर, कल रा चौक बाजार गया था, वहां बड़ी मजेदार घटना घटी, लेकिन देख, तु

ा तो रहा हूं, पर बुरा मत मानियो। ोंकि आज ही से मुझे 'तुम्हारे मुंह ' तकिया-कलाम कहने की आदत पड़ है।' मैं उसका मतलब समझ तो ा कि यह मुझे मूर्ख बनाएगा, पर र भी मैंने बुरा नहीं मानने का वायदा दिया।'

'छक्का लाल बोला, 'डीयर भगंदर, चौक गया तो क्या देखता हूं कि ं 'तुम्हारे मुंह पर' एक बारात ल रही है, बीच ही में काना दूल्हा लगा 'तुम्हारे मुंह पर' कि मैं तो गर्मी के समय में मक्के की रोटी ऊंगा 'तुम्हारे मुंह पर'। मक्के की ी वहां कहां धरी थी? लिहाजा की भीषण चीख-पुकार सुन कर की का बाप भागा-भागा आया हारे मुंह पर' नंगे पैर ही। उसने ार समझाया, पर दूल्हा तो अड़ कर गया। दूल्हे का पागलपन देखकर की के बाप ने शादी कैंसिल कर दी हारे मुंह पर' फिर तो जो जंग ड़ी तो क्या कहने? बारातियों ने पत्थर एक ओर से फेंकने शुरू कर ए 'तुम्हारे मुंह पर' तो दूसरी ओर डंडे चलने शुरू हो गए 'तुम्हारे मुंह ' कुछ ही देर बाद दोनों पार्टियों ने त वाली नाली की गन्दी कीचड़ उठा ा कर फैंकनी शुरू जो की 'तुम्हारे ह पर' तो पुलिस के न आने तक न ने कितने मन कीचड़ फेंकी जा चुकी 'तुम्हारे मुंह पर'...।'

'छक्का लाल की बात पूरी हुई तो बेवकूफ की तरह कुछ देर सिर नीचा ए कुछ सोचने लगा। अचानक मैं ा हो गया, क्योंकि ऐसा ही आइडिया माइंड में भी आ गया था। मैं से बोला, 'यार छक्का, तूने यहीं तक ा और मैंने इसके आगे की घटना देखी। देख बुरा मत 'फील' करियो, क्योंकि मुझे अभी से 'तुम्हारे सिर पर' तकिया-कलाम लगाने की आदत पड़ गई है। मैंने कहना शुरू किया...'

'डीयर छक्का, जब बारात को वापस लौटना ही पड़ा 'तुम्हारे सिर पर' तो पिटे-पिटाए सारे बाराती खफा हो गए 'तुम्हारे सिर पर' कि इसी मरदूद काने दूल्हे के कारण ही पिटाई हुई है 'तुम्हारे सिर पर'। बस उन सबने आव देखा न ताव, लगे अपना गुस्सा उतारने



'तुम्हारे सिर पर' सबने अपने-अपने 'हाई हिल' के वो जूते लगाए 'तुम्हारे सिर पर' कि जूते खा-खाकर दूल्हा बेचारा लगा टेसुए बहाने 'तुम्हारे सिर पर...'

'मेरी बात से अपनी बात कटती देख, छक्कालाल गुस्से से खिसियाता हुआ चिल्ला कर बोला, 'अबे आदमी की दुम, तेरा नाम तो भगंदर सिंह के बजाए सरौता सिंह होना चाहिए। जब देखो टप्प से बात काट देता है। आज से मैं, तेरा यही नाम रखे देता हूं।'— अपने इस अजीब नाम का इतिहास, स-कारण सुना कर सरौता सिंह जी

शेष पृष्ठ ४१ पर



मोटू पतलू
पिछले दिनों घसीटा राम ने इलैक्ट्रानिक यंत्रों और सूक्ष्म किरणों के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डाक्टर डबल जीरो की प्रयोगशाला से एक हाई-पावर गैस का सलेंडर चुरा लिया था और उस गैस के सलेंडर ने घसीटाराम के साथ-साथ मोटू-पतलू का भी कबाड़ा कर दिया था, तभी से अपने गैस के सलेंडर की खोज में डाक्टर डबल जीरो का बनाया सूक्ष्म किरणों और ओटोमैटिक यंत्रों से नियंत्रण किया जाने वाला रोबोट घसीटाराम के पीछे लगा है और अब उसके साथ ही के घर में रह रहा है।
इस घर फूंक तमाशे का अब कुछ और मजा लीजिये।
अबे ओ करेले की दुम, आज कल मोबिल आयल भी देशी घी के भाव है, तू कुछ दिन और यहाँ टिक गया तो मेरा ऐसा दिवाला पिटेगा, कि यहाँ खाने के लिए गम और पीने के लिए आंसू ही रह जायेंगे।
INDIAN OIL
अरे यह क्या ? मोटू पतलू ने स्कूल खोल लिया ? भुट्टे भूनने वाले बच्चे पढने लगे।
शिक्षा मंत्री द्वारा मोटू-पतलू वी आई पी स्कूल का उद्‌घाटन
बच्चों को देश का निर्माण करने के योग्य बनाया जायेगा।
जिन्हें रुमाल से नाक साफ करनी नहीं आती, वे स्कूल के संस्थापक बन गये हैं। हे भगवान, तू कब तक अपने गधों को हलवा खिलाता रहेगा ? चलकर देखू तो सही माजरा क्या है ?
घसीटा राम ने चालाकी से रोबोट को बाथरूम में बंद किया
और मोटू पतलू के स्कूल का इंस्पेक्शन करने पहुंच गया
मोटू पतलू VIP स्कूल
यहां बड़े-बड़े अमीरों के बच्चे पढते हैं।
धर्मेन्द्र और हेममालनी ने अपने बच्चे को हमारे स्कूल में दाखिल कराने का वादा किया है

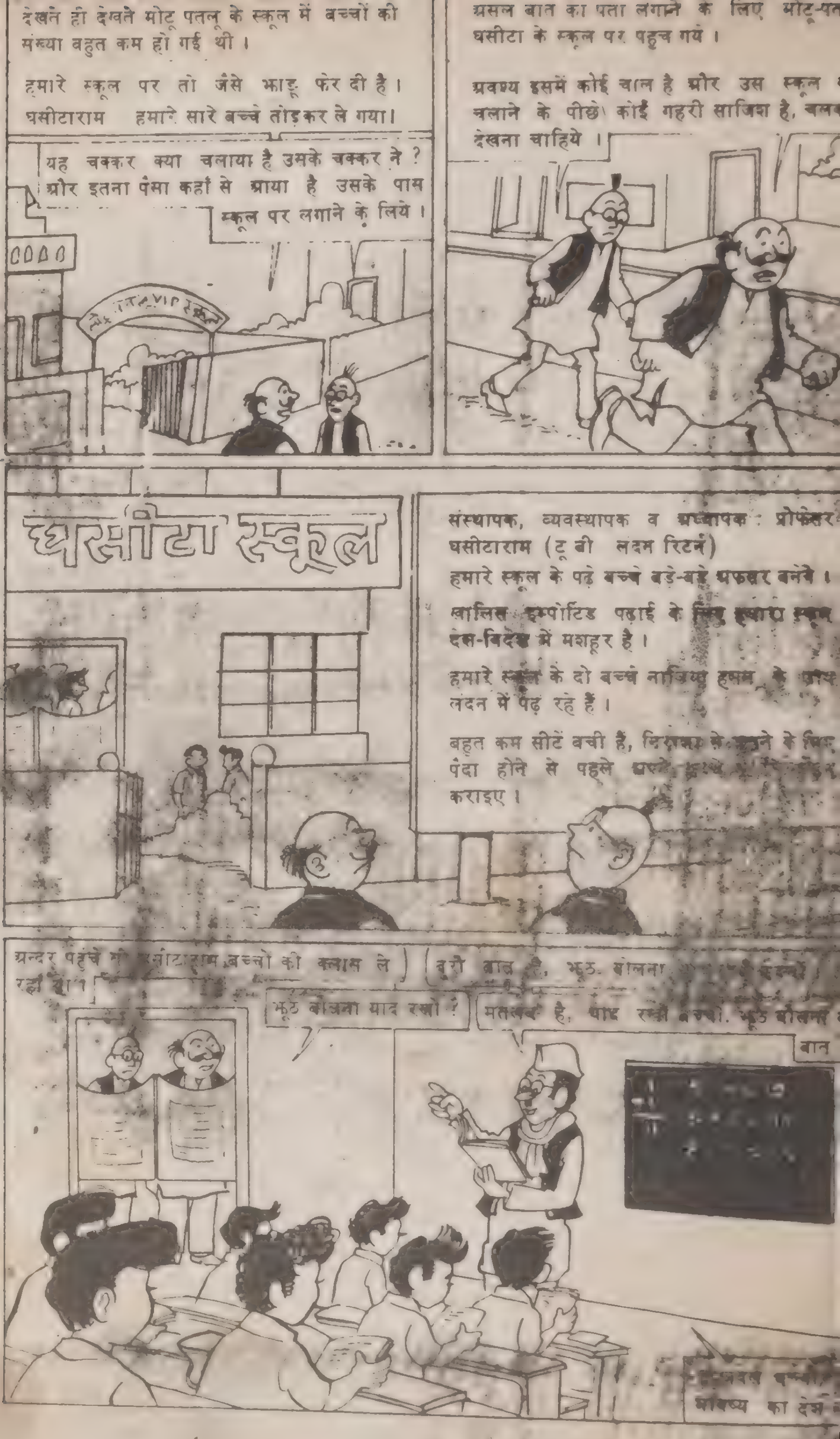


देखो बच्चों, तुम्हें बड़े होकर महान् आदमी बनना है, छोटों से प्यार करना है और बड़ों का आदर करना है, समाज की सेवा करनी है और देश को ऊपर उठाना है ।
और मोटू-पतलू को धरती में गाड़ना है, मुझे बीस साल का तजुर्बा है बच्चे पढ़ाने का और वह उलटे अक्षर को भैंस समझने वाले धक्केशाही से ही स्कूल के टीचर बन गये हैं ।
वहीं दो चलते पुर्जे कुछ हेरा-फेरी की योजना बना रहे थे ।
मोटूपतलू VIP स्कूल
देख रहे हो बास, इस वी. आई. पी. स्कूल में बड़े-बड़े अमीरों के बच्चे पढ़ते हैं ।
देख रहा हूं, छोटे-मोटे अमीरों से हमें क्या लेना देना है ।
यही वह जगह है, जहां से हमें बोरियों में भर कर और तराजू से तोल कर कुइन्टलों के हिसाब से नोट मिल सकते हैं ।
भी वहां शक्करखोरों से मूंजी की टक्कर हो गई ।
या आप अपने बच्चों को इस स्कूल में दाखिल राने आये हैं ?
सोच तो रहे हैं ।
स्कूल
मतलब है अपने बच्चों का बेड़ा गर्क करने की बात सोच रहे हो । अरे इस फटीचर स्कूल में बच्चों को दाखिल कराने से तो अच्छा है, उन्हें किसी कूये में धक्का दे दो ।



क्या कोई और स्कूल है तुम्हारी नजर में, जहां इससे भी अधिक अमीरों के लड़के
मतलब है आप बहुत अमीर हैं क्या ? करोड़पति और अरबपति हैं क्या ? वह स्कूल मैं खोलने वाला हूं, बहुत अमीर लोगों के बच्चों का ।
खोलने वाले हो? अब तक क्यों नहीं खोला है ?
बात यह है सेठ जी, आप तो अपने आदमी हैं, आपसे क्या पर्दा ? मुझे बीस साल का तजुर्बा है स्कूल चलाने का, बस रुपये की कमी से मात खा जाता हूं ।
आदमी काईयां लगता है बास, पर रुपये के झांसे में आ जायेगा ।
ठीक कह रहे हो । एक स्कीम मेरे दिमाग में आई है
ऐसा करते हैं
श्रीमान घसीटा
श्रीमान घसीटा
कि स्कूल खोलने
रुपया आपको
स्कूल तुम चलाओगे, बच्चे तुम पढ़ाओगे । नाम तुम्हारा होगा । कमाई तुम्हारी होगी ।
नाम मेरा होगा । कमाई मेरी होगी ।
पर स्कूल पर नियंत्रण हमारा होगा ।
पालीसी हमारी चलेगी ।
चलेगी क्या, तुम्हारी पालीसी दौड़ेगी । लेना-देना है पालिसी से ।
मतलब है स्कूल का, बाकी स्टाफ हमारी
रखा जायेगा ।


हर आदमी अपनी मर्जी का रख लेना। मुझे इससे भी क्या लेना देना है। पर अभी तुम कह रहे थे, स्कूल मेरा होगा। नाम मेरा होगा। कमाई मेरी होगी।
तुम्हारी होगी, हमारे सेठ धनीराम जी ाज सेवा के लिये स्कूल में रुपया लगा रहे हैं।
मेरे बीस साल के तजुर्बे को देखते हुए?
तुम्हें इक्कीस साल का तजुर्बा देने के लिये?
घसीटाराम जी को शुरू के खर्च के लिए कुछ रुपए दे दो मुनीम जी।
यह लो दस हजार हैं और जितना कम पड़े लेते रहना।
स्कूल के लिए किसी अच्छी-सी जगह का प्रबन्ध करो और खूब जम कर प्रचार करो। बड़े-बड़े अमीर घरानों के बच्चे अपने स्कूल में लाने के लिये खुद उनके घर जाओ और उन्हें अपने स्कूल के गुण बता कर उनके बच्चे अपने स्कूल में लाओ।
मैं सब कर लूंगा सेठ जी, दूसरों को अपने श्वास में लेने का मुझे बीस साल का तजुर्बा है।
रुपए की कमी थी, वह पूरी हो गयी। स्कूल के लिये अच्छी-सी जगह चाहिये थी, तो घसीटाराम के लिये उसके घर से अच्छी जगह और कौन-सी हो सकती थी। सेठ जी और मुनीम जी भी सारी अच्छाई बुराई उसी के सर थोपना चाहते थे। वे भी घसीटाराम के घर को ही स्कूल बनाने के लिए राजी हो गये।
पैसे की रेल-पेल में अब भला देर किस बात की थी? घसीटाराम ने अपने फटेहाल घर की मरम्मत कराई, बाहर के लान को फूल-पौधों से सजाया, हजारों रुपये का फर्नीचर खरीदा और बाहर एक बड़ा-सा बोर्ड लगा कर स्कूल का श्रीगणेश कर दिया। चापलूसी करने और बातें बनाने में घसीटाराम का जवाब नहीं। समाचार-पत्रों में विज्ञापन देकर मोटू-पतलू के स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के घर घर जाकर और उनके
ता-पिता के सामने मोटू-पतलू के स्कूल की बुराई करके और अपने स्कल की तारीफों के पुल बांध कर घसीटाराम ने मोटू-पतलू वी. आई. पी. स्कूल के काफी बच्चे तोड़ लिये।
वन घसीटा स्कूल
तुम्हारे बच्चे कहां हैं? उन्हें भेज दो स्कूल में।
सेठ जी के बच्चे लन्दन में पढ़ रहे हैं। वे आज तक कहीं और नहीं पढ़े। यह उनका रिकार्ड है।
लन्दन में रिकार्ड है? रिकार्ड तो आजकल नाजिया हसन के बज रहे हैं हर तरफ। क्या आपके बच्चे लन्दन में नाजिया हसन के साथ पढ़ रहे हैं?
हां, नाजिया हसन के साथ पढ़ रहे हैं।



देखते ही देखते मोटू पतलू के स्कूल में बच्चों की संख्या बहुत कम हो गई थी।
हमारे स्कूल पर तो जैसे झाड़ू फेर दी है। घसीटाराम हमारे सारे बच्चे तोड़कर ले गया।
यह चक्कर क्या चलाया है उसके चक्कर ने? और इतना पैसा कहाँ से आया है उसके पास स्कूल पर लगाने के लिये।
असल बात का पता लगाने के लिए मोटू-प
घसीटा के स्कूल पर पहुंच गये।
अवश्य इसमें कोई चाल है और उस स्कूल
चलाने के पीछे कोई गहरी साजिश है,
देखना चाहिये।
घसीटा स्कूल
संस्थापक, व्यवस्थापक व अध्यापक : प्रोफेसर घसीटाराम (टू बी लंदन रिटर्न)
हमारे स्कूल के पढ़े बच्चे बड़े-बड़े अफसर बनेंगे।
खालिस इम्पोर्टिड पढ़ाई के लिए हमारा स्कूल देश-विदेश में मशहूर है।
हमारे स्कूल के दो बच्चे
लंदन में पढ़ रहे हैं।
बहुत कम सीटें बची हैं,
पैदा होने से पहले
कराइए।
अन्दर पहुंचे तो घसीटाराम बच्चों की क्लास ले रहा था।
झूठ बोलना याद रखो!
बुरी बात है, झूठ बोलना
मतलब है, याद रखो बच्चो.
बात
भविष्य का देश



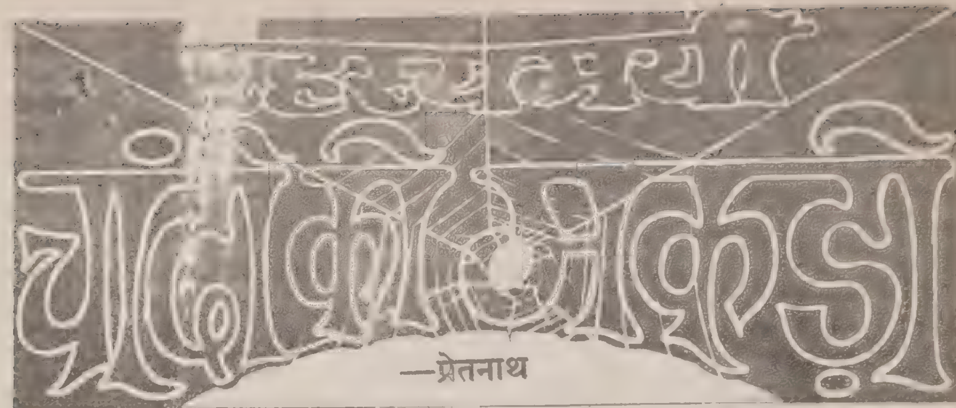
भविष्य का देश हो।'
मैं कह रहा हूं, बच्चो, तुम देश का उज्ज्वल भविष्य हो।
अब कह रहे हो यह, पहले कुछ और अगड़म बगड़म बोल रहे थे।
क्या कर रहे हो? किससे पूछ कर आये हो मेरे स्कूल में? निकल जाओ यहां से।
हम यह देखने आये हैं कि ऐसा कौन सा गड़ा खजाना तुम्हारे हाथ आया है जो तुमने इतना शानदार स्कूल खोल लिया है।
कोई-सा भी गड़ा खजाना हाथ आया है, कहीं से भी हाथ आया है, तुम्हें इससे क्या? तुम अपने वी. आई. पी. स्कूल में जाकर मक्खियां मारो। निकल जाओ यहां से, आई से गैट आऊट।
अपना-सा मुंह लेकर मोटू-पतलू स्कूल से बाहर की ओर चल दिए। वहां कुछ अजीब आदमियों की शक्लें उनके दिमाग में शुबा पैदा कर रही थीं।
कुछ पता नहीं लग सका पर मामला गम्भीर है।
का काम ठीक-ठाक चल रहा है ना।
करता जा रहा है।
और इसके साथ ही तुम्हारा नाम भी चमकता जा रहा है।
मेरा नाम तो आसमान का सितारा बन कर चमक रहा है सेठ जी। सब आपकी कृपा है।
अभी तो एक खास और बहुत बड़ी कृपा करने वाले हैं तुम पर।



स्कूल में जो बच्चों की फीसें आयें वह तुम रख लिया करो।
जो फीसें आयें वे मैं रख लिया करूं? सारी की सारी रख लूं?
हां सारी की सारी रख लो और स्कूल पर जो खर्च होगा वह सेठ जी तुम्हें अलग से दे दिया करेंगे।
बड़े दयालू हैं सेठ जी।
अजी दया तो यह कूट-कूट कर दूसरों में भी भर देते हैं। अभी तुमने इनकी कुटाई···
मतलब दया देखी ही कहां है।
हमने स्कूल के लिए एक वैन खरीदी है। अब से बच्चे स्कूल की वैन में घर से स्कूल और स्कूल से घर आया जाया करेंगे।
बच्चों से पूछना पड़ेगा कौन-कौन वैन का खर्चा बर्दाश्त कर सकते हैं।
खर्चे की कोई बात नहीं, बच्चों से हम वैन का कोई किराया वसूल नहीं करेंगे। बल्कि जो बच्चे हमारी वैन में आना-जाना पसन्द करेंगे उनकी फीसें हम आधी कर देंगे।
फीस आधी कर देंगे। मतलब है मेरी आमदनी आधी हो जाएगी। फीस मैं ले लिया करूंगा अभी आपने यही कहा था न सेठ जी?
हां कहा था।
तो फिर वैन'वैन छोड़िये बच्चों को पूरी फीसें देकर ऐसे ही आने दीजिए जैसे अब आ रहे हैं।
क्या बकते हो? पहले ही यह तय नहीं हो गया था कि स्कूल में पालिसी हमारी चलेगी?
हां, यह तय हुआ था।
तो तुम स्कूल चलाने के काम में दखल मत दो। बच्चे वैन से ही आया जाया करेंगे और फीसें आधी होने पर तुम्हें जो कमी पड़ेगी वह हम पूरी करेंगे। तुम्हें तो पैसों से मतलब है ना?
पैसों से ही मतलब है। और क्या स्कूल चलाने की पालिसी को शहद लगा कर चाटना है मुझे। पैसे का ही तमाशा है, वरना क्या रखा है इस जहान में।
इसी बात का हम तुम्हें तजुर्बा कराना चाहते हैं।
बीस साल का।
इक्कीसवें साल का भी हो जायेगा कुछ दिनों में।
तुम जाओ, अब हमें कुछ आपस की बातें करनी हैं।



इस कहानी का खतरनाक मोड़ देखिये आगामी अंक में ।



भाग — ६

"महिन्दर ने कुछ पैसे निकाल कर लड़की को दिये उसने तीनों को गुब्बारे दिये तथा उनके पैसों का बाकी देने में व्यस्त हो गई, जैसे ही वह झुकी, वह दबी आवाज़ में बोली, "तुम्हारा पीछा हो रहा है, एक आदमी और एक औरत, वो खतरनाक दिखाई नहीं देते। मुझे लगता है वे तुम से बात करना चाहते हैं। वहाँ जाकर एक मेज़ पर बैठ जाओ और खाने के लिये आइसक्रीम मँगवाओ। इन लोगों को अपने से बात करने का अवसर दो"।

"हर लड़के ने अपनी इच्छा मन में लाकर गुब्बारे छोड़ दिये और उन्हें देखते रहे जब तक गुब्बारे आकाश में नन्हे नन्हें बिंदुओं में बदल गये। फिर वे धीरे-धीरे निकट ही लगी लाल चैक के मेज़पोश के निकट बैठ गये और इतनी ही देर में मक्खी जैसी मुछों वाला एक बैरा इनकी ओर आ गया, और जल्दी से बोला "आइसक्रीम शायद गरम चोकलेट या सैंडविच?"

इन्होंने सिर हिलाया और बैरा वापिस चला गया। चारों ओर देखते हुए उन्होंने एक आदमी और औरत को गुब्बारा ख़रीदते देखा श्याम ने उन्हें तुरन्त पहिचान लिया ये ही दोनों सुबह प्रिंस पॉल की तस्वीर के सामने इन लोगों के पीछे खड़े थे।

और उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि ये ही दोनों इन के पीछे लगे हैं।

धीरे-धीरे ये दोनों इनकी ओर आ गये और इनके पास वाली मेज़ चुन कर बैठ गये। इन लोगों ने आइसक्रीम तथा कॉफी का आर्डर दिया फिर झुक कर राजू महिन्दर और श्याम की ओर देख कर मुस्कुराये।

"क्या तुम भारतीय लड़के हो? औरत ने घरघरी सी आवाज़ में पूछा।"

"हाँ श्रीमती जी, क्या आप भी भारतीय हैं?" राजू ने उत्तर दिया। "हाँ बिलकुल तुम्हारी ही तरह" औरत ने कहा।

औरत की बात सुन कर कि ये भारतीय दिल्ली से आये हैं राजू घबरा गया, आखिर इन दोनों को कैसे मालूम हुआ कि हम दिल्ली के हैं। आदमी ने जल्दी से कहा, "तुम दिल्ली से आये हो न? कुछ भी हो तुम दिल्ली वालों के जैसे कपड़े पहने हो"।

"हाँ श्रीमान्" राजू बोला "हम दिल्ली से ही आयें हैं हम कल रात ही पहुँचे हैं"।

"हमने तुम्हें सुबह स्मृतिचिह्न कमरे में देखा था औरत बोली, अच्छा, वो स्वयं युवराज जोरो ही था ना, जो तुम्हारे साथ था राजू ने सिर हिलाया। "हाँ, वे हमें घुमा रहे थे, फिर राजू, महिन्दर और श्याम की ओर देख कर बोला, "चलो बैरा के आइसक्रीम लाने से पहले हाथ धो लें, मैंने मसखरों के पास में ही एक हाथ धोने की जगह लिखा देखा है"।

फिर उसने उस दम्पति की ओर देख कर कहा। "हम हाथ धोने जा रहे हैं क्या इतनी देर

आप हमारे कैमरों का ध्यार रख लेंगे? "अवश्य," आदमी ने बड़ी सी मुस्कुराहट बखेरते हुए उत्तर दिया "हम इनकी चोरी नहीं होने देंगे, चिन्ता न करो!"

"धन्यवाद, जनाब, "राजू उठा और तुरन्त हाथ धोने के स्थान की ओर चल दिया'। श्याम और महिन्दर जिन्हें कुछ कहने का अवसर ही नहीं मिल पाया था उसके पीछे हो लिये।

"क्या चक्कर है, राजू? महिन्दर ने करीब आते ही धीरे से पूछा,"कैमरे छोड़ कर क्यों आ गये?"

"शश . . .राजू ने सावधान किया "मुझे एक विचार आया है, बस साथ आ जाओ"।

वे जाते हुए गुब्बारे वाली लड़की के करीब से गुज़रे, बिना रुके ही राजू ने उससे कहा, "ज़रा उस औरत और आदमी का ध्यान रखना, यदि वे हमारे कैमरों को हाथ लगायें तो हमें बता देना। हम एक मिनट में वापिस आ रहे है।"

उसने सिर हिला दिया और तीनों जासूस ऐसे मजे करते चले गये मानो वे कोई साधारण सैर सपाटे करने वाले हों।

हाथ धोने का कमरा पेड़ों के झुरमुट में एक पत्थर से बना मामूली सा कमरा था। जब वे तीनों कमरे में पहुँचकर अकेले हो गये महिन्दर जोर से बोला "इसका क्या मतलब है, राजू"?

राजू ने नल खोलते हुए उत्तर दिया "वे दोनों हो सकता है हमारे वहाँ न होने पर कुछ आपस में बोलें, जिससे हमें कुछ पता चल जाये।"

"परन्तु इससे हमें क्या लाभ होगा?" श्याम भी हाथ धोता हुआ बोला।

"मैंने अपने कैमरे का टेप रिकार्डर चला दिया है, वह बहुत ही शक्तिशाली है कोई भी आवाज़ उससे बचेगी नहीं, अच्छा अब और बात न करो, शायद कोई हमारी बातें सुन रहा हो"। उन्होंने चुपचाप हाथ धोये और वापिस चल दिये, पास से निकलने पर गुब्बारे वाली लड़की ने न में सिर हिलाया, अर्थात उन लोगों ने कैमरे नहीं छुए। और इन लड़कों की अनुपस्थिति में कुछ नहीं हुआ। दोनों बैठे काफ़ी पी रहे थे और इनके कैमरे अब भी मेज़ पर ही रखे थे।

"किसी ने तुम्हारे कैमरे छूने का प्रयास नहीं किया लड़कों। ये एक बहुत ही ईमानदार देश है। बैरा तुम्हारी आइसक्रीम लाया था परन्तु मैंने उसे बता दिया था कि तुम एक मिनट के लिये गये हो। आह! वह फिर से आ गया"। बैरा भरी हुई ट्रे लेकर लड़कों के निकट आया और आइसक्रीम गरम चाकलेट और सैडविच मेज़ पर रख दिये। ये जानते हुए कि वो दोपहर को फिर नहीं खायेंगे, लड़कों ने मन भर कर खाया। कुछ क्षणों के बाद पास वाली मेज़ पर बैठे आदमी और औरत ने अपनी काफ़ी समाप्त कर ली और इन्हें 'बाई' कह कर चले गये।

"यदि इन लोगों का हम से कुछ पूछने का विचार था तो इन्होंने अपना इरादा बदल दिया मालूम होता है," महिन्दर बोला "उम्मीद है! इन लोगों ने आपस में बातचीत की हो," राजू बोला उसने अपने कैमरे के एक छोटे से बटन को दबाया जिससे टेप रिकार्डर का टेप खुल कर वापिस चला जाता था, फिर दूसरा बटन दबा कर उस टेप को फिर से चलाया। पहले तो हल्की सीसी की आवाज़ आती रही परन्तु फिर आदमी की आवाज़ सुनाई दी, जिसे सुनकर श्याम एकदम खुशी से उछल पड़ा।

"जैसा मैंने सोचा था वैसा ही हुआ" राजू बोला।

श . . .राजू ने सब को चुप किया। "सुनते हैं क्या बातचीत हुई, खाते रहो और कैमरे की ओर न देखो"।

उसने टेप को फिर से भरा और आवाज़ को इतना धीमा कर दिया कि पास की मेज़ पर भी सुनाई न दे सके। उन्होंने ये वार्तालाप सुना—

आदमी—"मेरे ख्याल से फ्रडी ने हमें बेकार के काम पर भेज दिया है, मैं शर्त

शेष पृष्ठ २४ पर


बुरे फंसे
अक्ल से काम लेकर
रेगिस्तान में फंस गया हूं. समझ में
आता, किधर जाऊं ? क्या करूं ??
कैसे-कैसे अजीब जानवरों के पांव के निशान हैं !
अरे उधर भाग ले जिधर पांव के छोटे-छोटे निशान हैं. उधर जान को कोई खतरा नहीं होगा उस छोटे से....
छ.... छ.... छोटे से
ज.... जानवर से !


सवाल यह है ?
सवाल यह है ?
कोई मुझ से लिफ्ट मांगे तो उसके लिए मेरे पास एक ही जवाब होता है...
नहीं।
मैं किसी को लिफ़्ट देती हूं तो बस ख़ास ख़ास हालात में.
सवाल यह है ?
पता है घरों की बजाये बड़ी-बड़ी दुकानों को लूटने में क्या लाभ है ?
लूट के माल का हिसाब हाथों हाथ हो जाता है ।
सवाल यह है ?
उस लड़की के सामने तुमने जहाँ प्रेम का प्रस्ताव रखा, तो पहले तो खैरियत इसमें रही कि पुलिस स्टेशन दूर था और तुम पकड़े जाने से बच गये, दूसरी खास बात क्या थी ?
हस्पताल वहां से पास था ।

पृष्ठ २१ से आगे
लगा कर कह सकता हूं कि ये तीनों लड़के जासूस नहीं हैं।'

औरत—फ्रैडी अक्सर गलती नहीं करता। उसने कहा था कि ये तीनों चालाक लड़के हैं, उसने इनके विषय में पता कर लिया है, ये अपने को थ्रीन जासूस कहते हैं।''

आदमी—''केवल खेल-खेल में जासूसी अभिनय करते होंगे। मुझे पूरा विश्वास है, इन्होंने कभी कोई समस्या नहीं सुलझायी होगी। केवल भाग्यवश ही कुछ पता क्यों न चल गया हो। यदि मैंने कोई बुद्धू लड़का देखा है, तो वो मोटा है।'' ये सुनकर महिन्दर और श्याम ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी रोकी। राजू बुद्धू बना रहता था और इसीलिये, ऐसा समझा जाने पर उसने कुछ परवाह न की।

औरत—''फिर भी फ्रैडी ने कहा था इनके पीछे लगे रहना और देखना ये किसी से मिलते तो नहीं। उसके विचार से ये CBI के साथ काम कर रहे हैं।''

आदमी—उन्हें किसी को बताने के लिये कुछ भी मालूम नहीं है, दूसरे मामूली लड़कों के समान ही ये बाग में घूम रहे हैं। किसी दूसरे को इनका पीछा करने दो।''

औरत—''तुम इन लड़कों से बातचीत कर इन्हें डयूक स्टीफन के प्लैन के मुताबि[क]
चलने को नहीं कहोगे?''

आदमी—''नहीं! मेरे विचार से ...
विचार नहीं है। मै सोचता हूँ केवल एक ...
काम करना चाहिये, जैसा कि फ्रैंडी भी हमे[शा]
से करने के प्रयास में लगा है, युवराज को ह...
कर डयूक स्टीफन को हमेशा के लिये देश ...
रीजैंट बना दिया जाये। फिर स्टीफन पर अप[ने]
प्रभाव के कारण, हमारी सिंडीकेट तथा रोब...
ही देश के असली शासक होंगे।''

औरत—''धीरे बोलो, कोई सुन लेगा।

आदमी—''यहाँ आसपास कोई सुन[ने]
वाला नहीं है। माया मैं तुम से सच कहता हूँ
यहाँ का वातावरण बहुत ही बढ़िया है। ए[क]
बार डयूक स्टीफन को रीजैंट बना लें फिर ...
सारा देश हमारी मुट्ठी में होगा। फिर देखन[ा]
हम क्या-क्या करते हैं। क्या तुमने कभी सोच[ा]
है, कि हमारा अपना देश हो, जिसमें ह[म]
मनमानी कर सकें?''

औरत—''जुआ खेलना। तुम कह र[हे]
थे, हम इस देश को संसार का सबसे ब[ड़ा]
जुआघर बना देंगे।''

आदमी—इसके अतिरिक्त हम इस देश ...



बैंक बनायेंगे जहाँ अमरीका तथा दूसरे देशों के लोग अपना काला धन जमा कर सकेंगे। ये सब तो शुरूआत होगी। हम यहाँ ऐसा कानून बना देंगे कि यहाँ से किसी को बाहर न ले जाया सके। इसका मतलब होगा सरकार यहाँ आ कर छुपे मुजरिमों को पकड़ नहीं सकेगी। संसार का कोई भी अपराधी जिसने कुछ भी किया हो यहाँ आकर सुरक्षित होगा, जब तक वह हमारी माँग पूरी करता रहेगा। इस प्रकार भागे हुए बदमाशों के लिये तरानिया स्वर्ग बन जायेगा।''

औरत—''सुनने से तो ये सब बिलकुल लगता है परन्तु यदि डयूक स्टीफन ये करने पर सहमत न हुआ तो ?''

आदमी—''उसे शासक बना रहने के लिये मानना ही पड़ेगा वह तो हमारी मुट्ठी में है। आह ! मैं कहता हूँ तरानिया रस भरा फल है, हमें तो केवल इसे तोड़ना है''।

औरत—''चुप ! . . . वे लोग आ रहे हैं।''

टेप बन्द हो गया, राजू ने मामूली तौर से कैमरे को घुमाया, इसी बीच उसने टेप को दुबारा लपेट कर बन्द करने का बटन दबा दिया।

''अरे ! महिन्दर बोला, ये तो उतनी ही बुरी स्थिति है जितनी वीरिशनाथ का ख्याल था। नहीं कहना चाहिये उससे भी बुरी हालत है, ये लोग तो सारे देश को बदमाशों का अड्डा बनाना चाहते हैं।''

''हमें वीरिशनाथ को बताना होगा,'' श्याम बोला। राजू ने भौहें चढ़ाते हुए कहा ''मेरे ख्याल से बताना बहुत आवश्यक है, मैं तो पूरा टेप उन्हें सुनाना चाहूँगा, परन्तु उसमें अधिक समय लग जायेगा। किसी ने देख लिया तो ? इसलिये इस बातचीत का सार ही उन्हें बता देंगे।''

ऐसा कह उसने कैमरा उठा कर फिल्म बदलने का सा उपक्रम किया परन्तु इसी बीच वह बटन दबा कर धीरे से बोलने लगा।

''पहला बोल रहा हूँ, क्या आप सुन रहे है ?''

''बिलकुल साफ़,'' वीरिशनाथ का स्वर आया ''कोई नई घटना ?''

राजू ने संक्षिप्त में उन्हें सब कुछ बता दिया।

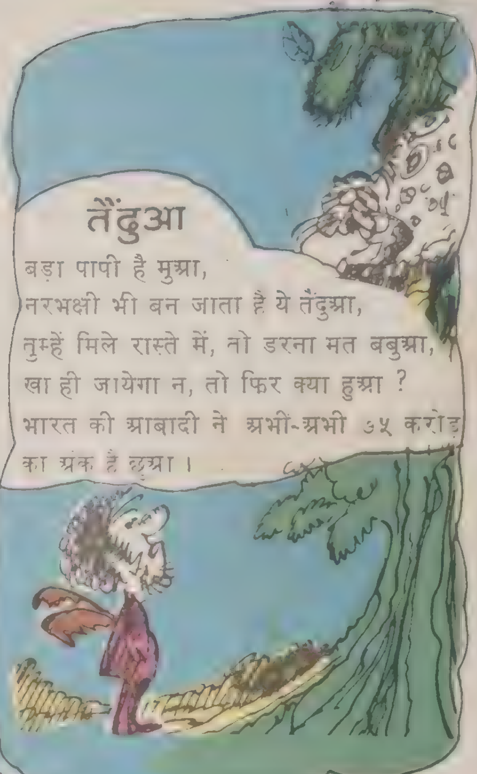
''बहुत बुरी बात है,'' सब कुछ सुन कर वीरिशनाथ बोले ''तुम्हारे बताये हुलिये से, ये आदमी मैक्स गुरान जुआरी जो 'निवानो' का है तथा उसकी पत्नी प्रतीत होते हैं। ये लोग बदमाशों के एक बहुत बड़े सिंडीकेट से सम्बन्ध रखते हैं। फ्रैडी और राबेंटा फ्रैडीमैन तथा रोबर्टोराइट जो बहुत बड़े जुआरी हैं मालूम होते हैं। ये षडयन्त्र तो हमारे ख्याल से कहीं अधिक बड़ा निकला। ये तो बदमाशों द्वारा तरानिया का देश हथियाने का प्रयास लगता है।''

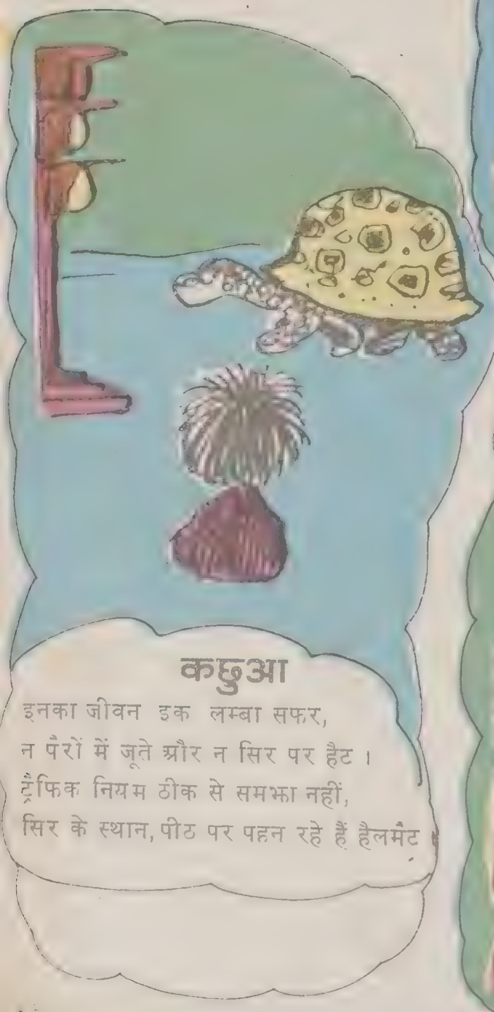
''पहला मौका मिलते ही, तुम लोग युवराज जोरो को सावधान कर देना। और कल तुम भारतीय दूतावास में आ जाना, महल में रहना सुरक्षित नहीं होगा, परन्तु इसके लिये उसे हम से मदद माँगनी होगी''।

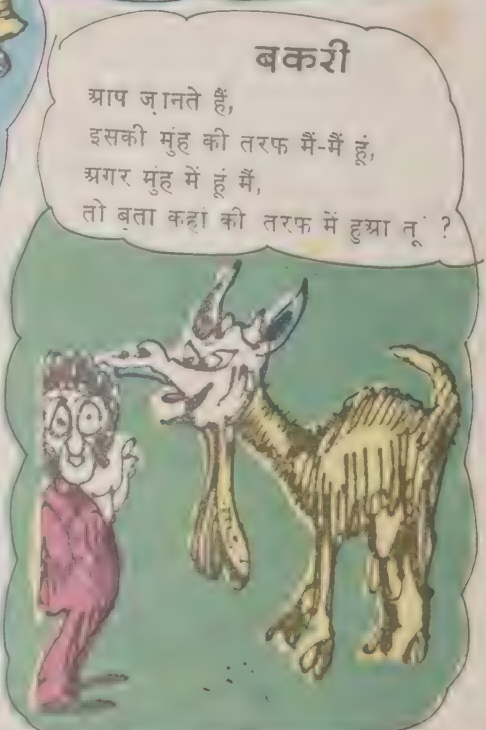
''अभी तक तुमने बहुत अच्छा काम किया है, जितना हमने सौंपा था उससे कहीं अधिक। परन्तु अब से बहुत सावधान रहना !''

क्रमशः

जानवरों के संग में इक नये रंग में








ऊँट
कोई कल सीधी नहीं साहब
रेगिस्तान के जहाज की निराली अदा है,
पीठ पर बैठा है शेख, मय माल अस्बाब,
और पीठ के अन्दर शायद अपना निजी
सामान लदा है।
गाय
कितने ही निबंध लिखो
इतने गुण इसमें जिसे कहते हम गाय।
नज़्म न लिखना,
अगर कविता लिखवानी होती,
तो यह दे रही होती दूध के स्थान पर चाय।
चूहिया
नर होता है चूहा, इसकी मादा है चुई।
लेकिन इसे देख मुंह से निकल जाता है ऊई।
जेब्रा
काली व सफेद पट्टियों से लैस,
अजब डिजाइन का होता है यह थल जीवी,
जब खुदा ने इसे बनाया होगा,
उसका ख़राब रहा होगा टी. वी.।



अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून : प्रेम में जब कभी जूते पड़ते हैं तो क्या होता है ?

उ० : लोगों का मुफ्त में मनोरन्जन होता है।

सतीश चन्द्र दीक्षित—भोपाल (म०प्र०) : गरीबचन्दजी, आप चूहे होकर भी सिलबिल-पिलपिल की बिरादरी में शामिल कैसे हो गये ? तथा आप उनसे आदमियों की भाषा में बात कैसे कर लेते हैं ?

उ० : जैसे आदमियों की भाषा में आपके पत्र का उत्तर दे रहा हूं।

नरेश कुमार गुलाटी—तिलक नगर मार्किट : गरीब चन्द जी, मैंने आपके भाई लोग पकड़ रखे हैं। आप उनसे कब मिलने आ रहे हो ?

उ० : भाई मेरे तुम चूहे पकड़ने में समय गंवा रहे हो ? यह उम्र तो किसी का आंचल पकड़ने की है।

हरीश 'केटी'—जबलपुर (म०प्र०) : मैं आपके साथ मिलकर ''आत्महत्या'' करना चाहता हूँ क्या आप मेरा साथ देंगे ?

उ० : मैं तो केवल उनका साथ देता हूँ जिनका और साथी नहीं होता। आपके साथ तो ६५करोड़ लोगों की भीड़ है। लोग जिस तरह आबादी बढ़ाये जा रहे हैं उससे लगता है कि सब आत्महत्या करने पर तुले हैं।

सन्तोष खन्ना—सहारनपुर : गरीब चन्द जी, आप का कोई माँ बाप है या आप इस संसार में अकेले हैं ?

उ० : अगर कभी मुसीबत पड़ी तो आपको बाप बना लूंगा। मां पैदा करना तो आपका काम होगा।

राधेश्याम पाहवा—राजेन्द्र नगर : दोस्त अगर दुश्मन बन जाए ?

उ० : तो वह टू-इन-वन बन गया समझिये।

नरेन्द्र गुलाटी—लुधियाना : अमीर आदमी कब गरीब की मज़बूरीयों पर कहकहे लगाता है ?

उ० : अमीर गरीब की मजबूरियों का फायदा उठाने में इतना बिजी हो जाता है कि उसे कहकहे लगाने का फालतू टायम ही नहीं मिलता।

रविन्द्र नाथ सरीन—लुधियाना : क्या आपके रिश्तेदार कभी नेता के घर में ठहरे हैं ?

उ० : शायद आपको पता नहीं कि भारत का हर तीसरा व्यक्ति नेता है।

अशोक जौहर 'गगन'—मोती बाजार (देहरादून) : इश्क के अन्धे का नाम यदि नयनसुख हो तो ?

उ० : नयनों का असली सुख वही तो उठाते हैं जो इश्क में अंधे होते है।

सुरेशकुमार मंगवानी सिंधी कालोनी—खण्डवा (म० प्र०) : गरीबचन्द जी, आप हर श्रोता का उत्तर देते हैं। लेकिन श्रोता आप को चूहा मास्टर कहते है। ऐसा क्यों ?

उ० : मै चूहा हूं इसीलिये तो लोग प्रश्न पूछते हैं। अगर मैं शेर होता तो लोगों की घिग्घी बंध जाती और गले से आवाज व पैन से स्याही न निकलती।

प्रेम बाबू शर्मा—बगीची पीर जी : प्यार का लाईसेंस कहाँ से मिलता है ?

उ० : किसी अंधेरे कोने से।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



मदहोश
बाप रे, साही ! जंगलों में पाया जाने वाला साहीं यहां शहर में कैसे ग्रा गया ?
कहते हैं साही शरीर में झटके देकर तीर छोड़ता है ग्रौर घायल कर देता है । यहां से चल मदहोश !
मदहोश होश में आ ।
यहां से भागना है तो भागो, लेकिन ग्रपना रेंजीगनेशन लेटर देते जाना । दफ्तर में यह हंगामे बाजी नहीं चलेगी । पिनकुशन को देख साही-साही चिल्ला रहा है ।

अगर जानवर मेकअप करते



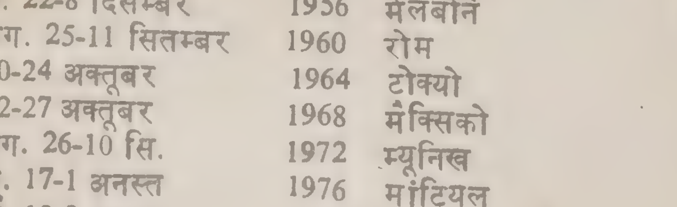

हाथी के लिए टैल्कम पाउडरों के डिब्बे उसी साइज के आते जिस साइज के कोलतार के ड्रम होते हैं।
मैंढ़की काजल लगाती तो एक बार में काजल की पूरी शीशी आंखों में खप जाती और मिस्टर मैंढक को हमेशा जुकाम हुआ रहता।
अगर गाय लिपिस्टिक का प्रयोग करती तो अनुमान लगाइये कि गाय का खर्च कितना आता। उसी हिसाब से दूध कितना महंगा होता।
भेड शैम्पू का प्रयोग करता तो ऊन के दाम इतने होते हमारी खाल उतर रही होती।

खेल खेल में

ओलम्पिक खेल

अब तक हुये ओलम्पिक्स के स्थान व आरम्भ की तिथियां

तिथि	सन्	शहर	देश
1. 6-15 अप्रैल	1916	ऐथेन्स	यूनान
2. 2-22 जुलाई	1900	पैरिस	फ्रांस
3. 29 अगस्त से 7 सि.	1904	सेंटलुई	अमरीका
4. 13-25 जुलाई	1908	लन्दन	इंगलैंड
5. 6-15 जुलाई	1912	स्टाकहोम	स्वीडन
6. नहीं हुये, विश्व युद्ध के कारण	1916	र्बलिन	जर्मनी
7. 14-29 जुलाई	1920	एंटवर्ण	बैल्जियम
8. 5-27 जुलाई	1924	पेरिस	फ्रांस
9. जु. 28-12 अगस्त	1928	एम्सटाडस	हालेंड
10. जु. 30-14 अगस्त	1932	लाखसेंजेलस	अमरीका
11. 1-16 अगस्त	1936	र्बलिन	जर्मनी
12. नहीं हुए, विश्व युद्ध के कारण	1940	टोक्यो-हैलसिंकी	जापान-फिनलेंड
13. नहीं हुए, विश्व युद्ध के कारण	1944	लन्दन	इंगलैंड
14. जु. 29-14 अगस्त	1948	लन्दन	इंगलैंड
15. जु. 19-3 अगस्त	1952	हेलसिंकी	फिनलेंड
16. न. 22-8 दिसम्बर	1956	मेलबोर्न	आस्ट्रेलिया
17. अग. 25-11 सितम्बर	1960	रोम	इटली
18. 10-24 अक्तूबर	1964	टोक्यो	जापान
19. 12-27 अक्तूबर	1968	मैक्सिको	मैक्सिको
20. अग. 26-10 सि.	1972	म्यूनिख	जर्मनी
21. जु. 17-1 अगस्त	1976	मांट्रियल	कनाडा
22. जु. 19-3 अगस्त	1980	मास्को	रूस



क्यों और कैसे

प्र० : संसार में सबसे बड़ा फूल किस देश में पाया जाता है?

राकेश गाँधी—नई दिल्ली।

उ० संसार का सबसे बड़ा पाया जाने वाला फूल है, सुमात्रा का महान फूल (Great Flower of Sumatra) 'रफ्लैसिया अरनोल्डी', जिसकी खोज सौ वर्ष पूर्व, सुमात्रा के जंगलों में डा० आरनाल्ड और स्टेनफोर्ड रैफल्स द्वारा की गई थी, इन्हीं के नाम पर इस फूल का नाम रखा गया है। यह विशाल फूल जिसका व्यास दो फुट है तथा वजन लगभग पन्द्रह पाउँड है, जंगल में पाई जाने वाली वृक्ष लता की जड़ से सीधा ही निकलता है। इसकी अपनी जड़ें या तने नहीं होते, यह एक पैरसाईट है, जो अपना सारा भोजन वृक्ष लता अपनी मेज़बान से लेता है।

जब पूरी तरह खिल जाता है तो त्वचा के रंग की मोटी पंखुड़ियाँ धरती पर एक हल्की महक के साथ फैल जाती हैं, जिस पर असंख्य मक्खियाँ भिनभिनाती हैं। परन्तु अजीब बात यह है कि इस विशाल फूल का जीवन बहुत ही छोटा है क्योंकि एक दो दिन ही खिलते रहने के बाद ही तेज़ी से मुरझाने लग जाता है।

हालाँकि रफ्लैसिया संसार में पाया जाने वाला सबसे बड़ा फूल है, लेकिन इसी क्षेत्र में पाया जाने वाला महान ऐरोईड आफ सुमात्रा (Giant Aroid of Sumatra) अमोरफोफेलस टीटानम संसार का सबसे बड़ा पुष्पसमूह है। यह पुष्प समूह छोटे-छोटे फूलों का एक समूह है जो एक ही टहनी पर उगता है और इसके चारों ओर एक प्याले की शक्ल का हरा आवरण होता है। यह पौधा बल्ब जैसे ट्यूबर से सतरह फुट की ऊँचाई तक बढ़ता है जिसका व्यास छः फुट के क़रीब होता है और दो वर्ष में इसमें केवल एक पत्ता उगता है जब तक की फूल निकलने का समय न हो जाये। यह अरोइड एक बार कियु गारडन में खिला था। इस फूल ने मई माह में निकलना शुरू किया था और अगस्त में जब पांच फुट नौ इंच ऊँचाई पर पहुंच गया, यह खुला। इसमें से एक बड़ी तेज़ महक निकली। खुलने के चौबीस घंटे के ही बाद सारा फूल मुरझाने लगा और कुछ ही दिन बाद झड़ गया।

प्र० : क्या संसार में ऐसा कोई देश है जहाँ चौबीस घंटे का दिन होता है?

प्रमोद लोहिया—बिहार।

उ० : जी हां, संसार में ऐसे देश भी हैं जहाँ आधीरात को भी सूरज चमकता है, ऐसा ही देश है नारवे, इस देश को 'दी लैंड आफ मिडनाइट सन' भी कहते है।

नारवे एक लम्बा तथा पतला देश है जो यूरोप के उत्तर पश्चिमी किनारे को बनाता है। स्वीडन के साथ मिलकर यह स्कैन्डेनेवियन पेनिनसुला बनाता है। इसका पश्चिमी तट उत्तरी समुद्र या नार्थ सी की ओर है और इसके उत्तरी तट बैरेन्टस सी के सामने है। नारवे का उत्तरी तिहाई भाग आरकटिक सरकल की उत्तर में है।

नारवे के पश्चिमी तथा उत्तरी भाग ऊँची पर्वत श्रृंखला से बने हैं इन पर्वतों के दूसरी ओर समुद्र की ओर तेज ढालान है।

इस देश का समुद्री तट कटा-फटा है और इस कारण यहाँ बहुत से हर मौसम में काम आने वाले बन्दरगाह हैं। छोटी तेज़ नदियाँ तेज़ी से पर्वतों से नीचे को बहती हैं।

दक्षिणी भाग में चौड़े ऊँचे सपाट मैदान हैं जिनमें बहुत से बर्फ और ग्लेशियरों से ढके हैं। दक्षिणी पूर्वी किनारे पर उपजाऊ समतल भूमि है और यहाँ ही नारवे की राजधानी ओसलो भी है।

इस देश की लगभग एक चौथाई भूमि पर जंगलात है परन्तु करीब एक तिहाई भूमि

शेष पृष्ठ ४५ पर

एटम बम बनाओ

*

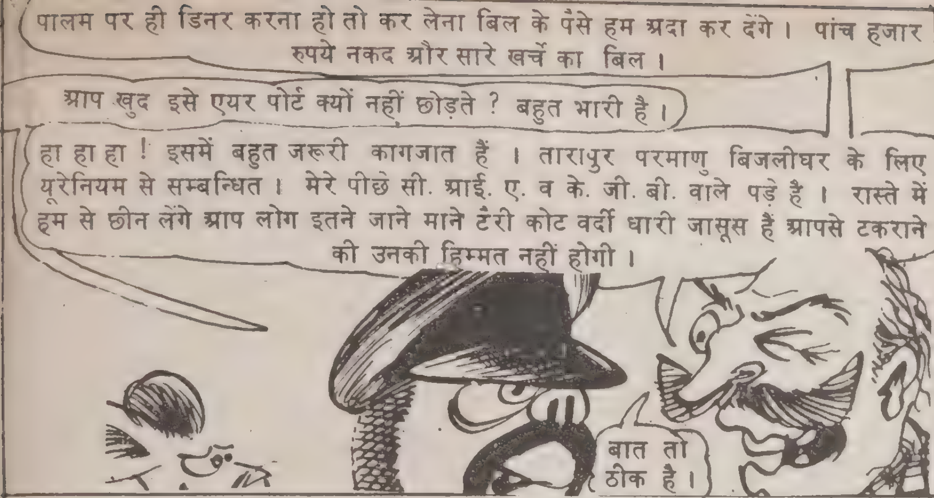
बढ़ती आबादी पर काबू पाने का यही एक तरीका रह गया है।

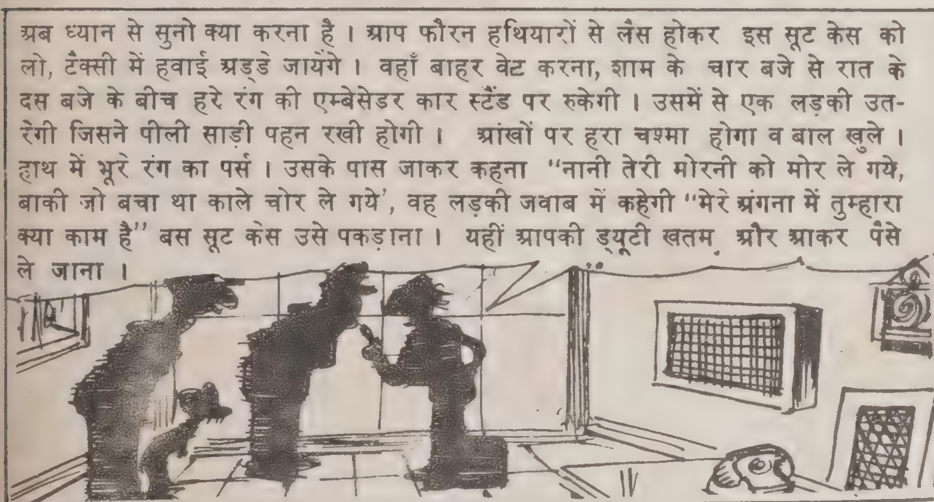

बच्चों के सूखा रोग
की प्रसिद्ध दवा
लाल तेल
बच्चों के दाँत
सरलता से
निकलते हैं।
निर्माता:— लाल तेल फार्मेसी उन्नाव, यू० पी०
दिल्ली में हमारे डीलर्ज :—
कान्ती लाल आर. पारिख, चांदनी चौक, दिल्ली-६
गोपाल केमिकल कम्पनी, तिलक बाजार, दिल्ली-६
दी रोयल केमिकल कम्पनी, ३२२,
खारी बावली, दिल्ली-६
रत्तनलाल जगजोत सिंह, १८६७, खारी बावली दिल्ली-६

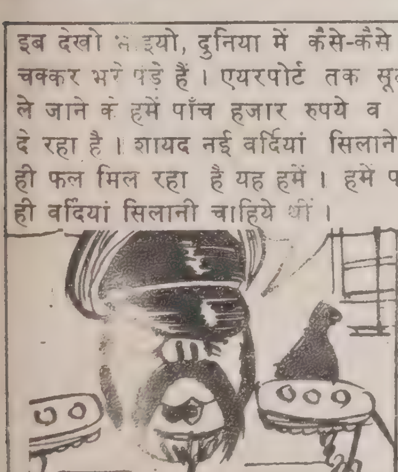

मीना, क्या तुम्हें पता है कि कुदरत फूल, पौधे, पहाड़ और मौसम के जरिये हमें कुछ न कुछ संदेश देती है। उदाहरण के लिये वह, वह बादल देखो ऐसा लगता है जैसे घास पर लेटे दो प्रेमी आपस में बात कर रहे हों।
अच्छा !
और वह डाल पर बैठी चिड़िया देखो क्या कर रही है ? वे आपस में प्यार कर रही हैं, यानि हमें संदेश दे रही है कि प्यार कैसे किया जाता है। जिन्दगी दो-चार दिन की, इसे बेकार मत गंवाओ !
फूलों पर मंडरा रहे भंवरों को देख ही रही हो। एक भंवरा फूल पर बैठा पराग का रस चूस रहा है, यह प्यार का अर्थ बता रहा है।
लल्लू...प्रकृति की भाषा अब मुझे भी कुछ-कुछ समझ आने लगी है।
और वह देखो सांप... फुफकार-फुफकार कर पता है क्या कह रहा है ?
कह रहा है काफी देर हो गयी है। घर जाओ। घर में मां बैठी इसी तरह फुफकार रही है। अगर तुमने प्रकृति की भाषा न सिखाई होती तो मुझे समय का पता ही न रहता, अच्छा टा टा।
?


सिलबिल पिलपिल
टैरिकॉट जासूसी
अब से जब भी हम जासूसी ड्यूटी पर होंगे ए-वन जासूसी की टैरिकाट की वर्दी पहने रहेंगे । वर्दी से आदमी में एक नयी शान आती है, नयी चुस्ती आती है, और लोगों पर रौब पड़ता है ।
हम वर्दी की शान में बट्टा नहीं लगने देंगे ।
वर्दी पहनने के बाद तुम दोनों पर एक नयी जिम्मेवारी आ गयी है । वर्दी की लाज रखनी है । अपराधियों की आधी जान हमारी वर्दी देखते ही निकल जायेगी ।
घर में डिस्को म्यूजिक के लिये थमने स्टीरियो सिस्टम तो लगा ही रखा है । वर्दी ने उसमें चार चांद लगा दिये हैं अब सचमुच भी ए-वन फशकिलास जासूस लगते हो, वर्दी गधे को भी घोड़ा बना देती है ।
बिंग क्रासबी ऐबाद होप ।
यही है वह ए-वन जासूस ? कपड़े तो उन्होंने बैंड मास्टरों वाले पहन रखे हैं । मैं गलती से गलत मकान में तो नहीं आ गया । घंटी बजाकर देखता हूं ।
यह ए-वन जासूसों का हैड क्वार्टर ही है न ? और तुम कौन हो ? इन जासूसों में इतना भी दम नहीं कि वह एक चूहा पकड़ सकें ? तुम कैसे उनके दफ्तर में राक एन रोल करते फिर रहे हो ?
मैं ए-वन जासूसों का जनरल सैक्रेटरी हूं, वह मुझे क्यों पकड़ने लगे ?
जनरल सैक्रेटरी साहब, एक बात बताइये कि आपके जासूसों ने छाती पर जो मैडल पहन रखे हैं क्या वह जासूसी मे कहीं जीते हुए हैं ?


यह तो कैम्पा कोला, ७७, थम्सअप और स्काच विस्की की बोतलों के ढक्कन हैं जो उन्होंने इस महीने अब तक पी हैं।
खैर छोड़ो, मुझे एक जरूरी केस के सिलसिले में जासूसों मिलना है। अन्दर चला जाऊं?
ठहरिये! हमारी जासूसी कम्पनी के जासूसों ने नयी वर्दी सिलवा रखी है इसलिए आजकल हम मुवक्किलों के कपड़े देखकर ही केस लेते हैं। देखिये आपके जूते गन्दे हैं। पता नहीं कब से पालिश नहीं करवा रखा है। क्रीम पालिश करवा कर आइये तभी वह बात करने को राजी होंगे।
अजीब बात है
कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।
मैं आपको एक केस सौंपना चाहता हूं। बहुत जरूरी काम है मैं पैसे की परवाह नहीं करता।
देखिये, जहां आप हमारी जासूसी करवाना चाहते हैं वहां का पूरा नकशा हमें दें। उस इलाके में सड़कें पक्की न हों तो हम काम नहीं लेंगे। कच्ची सड़कों पर धूल और कीचड़ में हमारी वर्दियों के गंदे होने का खतरा है।
हमारी कार सर्विसिंग के लिए इंगलैंड गई है। जब तक वह वापिस नहीं आ जाती।
हा हा हा! क्या आपके पास कार नहीं है
कोई बात नहीं, मैं आपको टैक्सी का किराया दूंगा। आपकी वर्दियाँ खराब नहीं होंगी और जूते नहीं घिसेंगे। बस काम इतना ही है कि इस सूट केस को सुरक्षित पालम हवाई अड्डे पर पहुंचाना है। रात की फ्लाइट से यह बम्बई जायेगा आपको केवल एयर पोर्ट बिल्डिंग के बाहर तक ले जाना है। आने जाने के टैक्सी के बिलों के इलावा और जो खर्चा होगा और पांच हजार रुपये फीस के मिलेंगे
पांच हजार।


पालम पर ही डिनर करना हो तो कर लेना बिल के पैसे हम अदा कर देंगे। पांच हजार रुपये नकद और सारे खर्चे का बिल।
आप खुद इसे एयर पोर्ट क्यों नहीं छोड़ते ? बहुत भारी है।
हा हा हा ! इसमें बहुत जरूरी कागजात हैं । तारापुर परमाणु बिजलीघर के लिए यूरेनियम से सम्बन्धित। मेरे पीछे सी. आई. ए. व के. जी. बी. वाले पड़े हैं । रास्ते में हम से छीन लेंगे आप लोग इतने जाने माने टैरी कोट वर्दी धारी जासूस हैं आपसे टकराने की उनकी हिम्मत नहीं होगी।
बात तो ठीक है।


अब ध्यान से सुनो क्या करना है । आप फौरन हथियारों से लैस होकर इस सूट केस को लो, टैक्सी में हवाई अड्डे जायेंगे । वहाँ बाहर वेट करना, शाम के चार बजे से रात के दस बजे के बीच हरे रंग की एम्बेसेडर कार स्टैंड पर रुकेगी । उसमें से एक लड़की उतरेगी जिसने पीली साड़ी पहन रखी होगी । आंखों पर हरा चश्मा होगा व बाल खुले । हाथ में भूरे रंग का पर्स । उसके पास जाकर कहना "नानी तेरी मोरनी को मोर ले गये, बाकी जो बचा था काले चोर ले गये', वह लड़की जवाब में कहेगी "मेरे अंगना में तुम्हारा क्या काम है" बस सूट केस उसे पकड़ाना । यहीं आपकी ड्यूटी खतम और आकर पैसे ले जाना ।


इब देखो भाइयो, दुनिया में कैसे-कैसे घन-चक्कर भरे पड़े हैं । एयरपोर्ट तक सूटकेस ले जाने के हमें पाँच हजार रुपये व खर्च दे रहा है । शायद नई वर्दियां सिलाने का ही फल मिल रहा है यह हमें । हमें पहिले ही वर्दियां सिलानी चाहिये थीं ।


कहीं इसमें कोई चक्कर तो नहीं है ? मुझे शक होता है कि सूटकेस में स्मगलिंग के हीरे हैं ।
उससे हमें क्या फर्क पड़ता है । हमें हवाई जहाज पर या हवाई अड्डे के अन्दर थोड़े ही जाना है ? हमें तो बाहर तक ही पहुंचानां है । अन्दर कुछ भी होता रहे ।


देखो भाई जी, ख्याल रखना सूट केस तुम्हारे पीछे पड़ा है । ख्याल रखना, इस सूट केस को कौन हाथ लगा सकता है । मेरे कोट के अन्दर फिटलेसर नीम गन की किरणें इसकी रक्षा कर रही हैं जैसे कोई इसे हाथ लगायेगा नीम गन के साथ फिट एलार्म डिवाइस में से मुर्गे के बोलने की आवाज आयेगी जैसे ही मुर्गा बोलेगा मैं उसकी गर्दन पकड़ कर उसी का मुर्गा बनाऊंगा ।
बोतल में ले आऊंगा ।
एयर पोर्ट
हमें यहां बैठे-बैठे चार घंटे हो गये लेकिन पीली साड़ी वाली अब तक तो नजर आयी नहीं ।
अब लगता है कि हमारी इंतजारी समाप्त हो गयी वह देखो हरे रंग की कार में से पीली साड़ी वाली हरे चश्मा पहने पर्स झुलाती लड़की निकल रही है । मुझे अभी जाकर उससे कहना होगा, तुम नजर रखना चारों तरफ ।
जो बचा था काले चोर ले गये ।
ऐ वट ?
धांय!

टी.आर.

कहते हैं, 'छक्का तो यहां से चला गया, पर मुझे इसी नाम से मशहूर कर गया। तब से ही लोग मुझे सरौता सिंह के नाम से जानते हैं।'।

यह तो हुई उनके नामकरण की बात।अपने नामकरण को सार्थक करने के बारे में भी सरौता सिंह पूरे सवा सोलह आने खरे उतरते हैं। कहीं भी कोई विषय चर्चा छिड़ी हो, राजनीतिक या पारिवारिक। सरौता सिंह जी वहां पहुंचे नहीं कि फटाफट सरौता शुरू हो जाता है। उनसे यदि कोई अच्छी बात भी करे तो वह खफा होते हुए, उस पर अपना सरौता चलाए बिना नहीं मानते। दूसरे लोग भले ही उनको कुछ भी समझें, पर वह स्वयं को सरस्वती मां का [illegible] रूप या चलता-फिरता '[illegible]' ही मानते हैं।

[illegible] की बात ही लीजिए। घर वाली ने कंघे की डिमांड करते हुए उनसे कहा, 'सुनिए, कंघे का एक दांत टूट [illegible] बाजार से नया कंघा [illegible] लाइए।' डिमांड सुनते ही सरौता सिंह [illegible] बोले, 'सोने की खदान [illegible] है क्या घर में, जो एक दांत के ही टूटने से [illegible] डिमांड कर दी?' [illegible] माथा पीटते [illegible] बोली, 'अजी [illegible] ही तो [illegible] दांत [illegible] कैसे कढ़ सकते हैं?'

वह घर वाली की इस बात को काट नहीं सकते थे, सो सरौता सिंह जी नाराज होकर पास वाले 'सुनसान गार्डन' में चले गए। जल्दी-जल्दी में एक पैर में जूता और दूसरे में सैंडिल उन्होंने पहन ली है, उनको इसका भी पता नहीं चला बाग की मखमली घास पर वह बैठे हुए न जाने क्या-क्या सोचने लगे। जैसे—पहले मुर्गी हुई कि अण्डा? [illegible] सिर पर सींग क्यों नहीं? आदि।

सरौता सिंह जी यहीं ऊल-जलूल सोचने में डूबे थे कि कुछ दूरी पर बैठे हुए एक आदमी ने उनके पैरों को देख कर कहा, 'अरे महाशय, देखिए तो, आपने भूल से जूते की जगह सैंडिल या सैंडल की बजाए एक पैर में जूता पहन लिया है।'

सरौता सिंह जी की बातों में किसी की दखल कैसे हो जाए? वह तपाक से उस आदमी की बात काट कर नाराजगी से बोले, 'साहब, आप कौन होते हैं, मेरी बातों में दखलंदाजी करने वाले? आप का कुरता, आपकी फेंकी हुई सिगरेट से इतनी देर से जल रहा है। पर मैंने देख कर भी क्या आपसे कुछ कहा?'

कल लाला राम भरोसे जी के यहां शाम को बुजुर्गों की पंचायत जमी हुई थी। लाला जी अपनी लड़की की शादी के लिए एक लड़का देख कर आए थे। इसी विषय पर चर्चा चल रही थी। लाला जी बोले, 'वैसे तो छोरा एकदम बढ़िया है [illegible], [illegible], खूब पढ़ो-लिखो [illegible] छोरा में एक [illegible] है [illegible] वो हंसबे लगे है तो [illegible] दांत बाहर कू [illegible] ही बुरी [illegible]'

[illegible] लाला जी [illegible] पूरी होती, इस से पहले ही बैठक में उपस्थित सरौता सिंह जी, उनकी बात पर अपने सुभाव का सरौता चलाते हुए बोले, 'अरे लाला जी, बस कर दो फटपट उससे, लड़की की शादी उसकी यह खराबी शादी के बाद अपने आप ठीक हो जाएगी।'

'वो कैसे, सरौता सिंह जी?'—लाला जी उनके शब्द सुन कर आश्चर्य से पूछने लगे, 'अरे लाला जी...' सरौता सिंह जी बोले, 'शादी के बाद लड़के को हंसना कैसे नसीब होगा? और जब

शेष पृष्ठ ४५ पर

फैण्टम-जंगल शहर

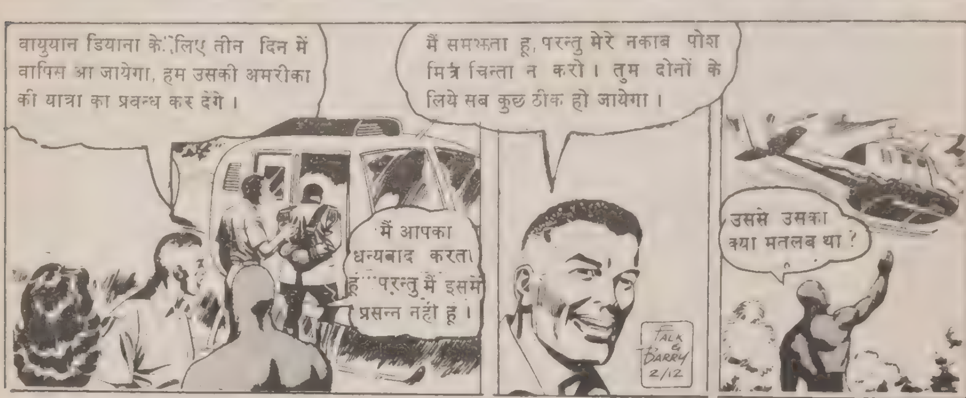


डियाना तुम बहुत खुश दिखाई दे रही हो!
क्यों नहीं. इन दो सुन्दर बच्चों और उस के साथ। परन्तु मैं दुखी हूँ।
मुझे यहाँ से जा कर अपने काम पर वापिस जाना है। माँ बच्चों को देखने के लिये बेचैन है।
अभी तक उसे बताने का मौका नहीं मिल पाया, मैं उसे तुरन्त बताती हूँ।
उसे मालूम है?
खोपड़ी गुफा में बच्चे, बिलकुल अनहोनी सी है।
अनहोनी बिलकुल नहीं है, यहाँ सदा ही बच्चे जन्मे हैं, मैं भी उनमें हूँ।
डियाना के जाने पर तुम्हें बच्चे याद आयेंगे।
क्या डियाना जा रही है?
तुम्हे नहीं बताया?
नहीं।
डियाना लामाँडा कहता है तुम बच्चों सहित जा रही हो?
क्षमा करना! मैंने समझा था तुम इस पर विचार कर चुके हो!
ओह . . . प्रिये . जब से तुम आये हो हमें एक क्षण भी अकेले साथ नहीं मिला।
हाँ, प्रिये! मुझे अपने काम पर वापिस पहुँचना है, और माँ बच्चों को देखने को स्वाभाविक ही बेचैन है?
मैं भी जाने में प्रसन्न नहीं हूँ, परन्तु याद करो हमने फैसला किया था।
हाँ! मुझे मालूम है
राष्ट्रपति लुआगा और फैन्टम . . .
डियाना और बच्चों का अमरीका में रहना, तुम्हारे लिये कैसा रहेगा?
मैं उसके लिये उत्सुक नहीं हूँ . . .
तुम भी उसके साथ जा सकते हो
मैं बाद में जाना चाहूँगा, इस समय तो मेरा जंगल से जाना सम्भव नहीं है।
हम इसका कुछ हल निकालेंगे।
हूँह . . .


डियाना, इससे मेरा कोई वास्ता तो नहीं है, फिर भी यह होगा कैसे, बच्चे और तुम अमरीका में और 'वह' यहाँ ?
अच्छा प्रश्न है, श्रीमान् राष्ट्रपति जी ?
अभी हमें मालूम नहीं। यह सब इतना नया है। परन्तु मुझे अपने यू.एन. के काम पर वापिस जाना है, और 'उसकी' यहाँ ज़रूरत है।
हूँ !
मुझे यह सुन्दर स्थान छोड़ कर जाने का खेद है. अपने प्लेन से अधिक समय मैं देश से बाहर रह गया हूँ।
इसका श्रेय तो बाबाबू को है।
डियाना, जाते ही तुम्हारे लिये वायुयान वापिस भेज दूँगा।
धन्यवाद राष्ट्रपति जी, आप बहुत दयालु हैं।
दयालु ! तुमने मेरे जीवन की रक्षा की है, और हमारे देश को उस राक्षस के हाथों से बचाया है। मैं तुम्हारे लिये जो भी कर सकूँगा करूँगा।
मेरे ख्याल से अब बाबाबू में लड़ने की ताकत बाकी नहीं रही।
हाँ ! उस बड़े बिल्ले से घसीटे जाने के बाद ! वह बड़ा बिल्ला मोटे चूहे के समान उसे घसीट रहा था . . .
मैं ! एक मोटा चूहा ?
घूंसा
उह !
बाबाबू। ठीक से रहो, यदि मुझे एक बार तुम्हें और रोकना पड़ा, तो मैं बहुत ज़ोर से मारूँगा !
वह भी ! आह, काफी जोर का था !
यह बहुत बुरा है कि तुम ऐसे राक्षस हो अन्यथा तुम्हारा बल और हिम्मत देश के काम आती !
!!
मुझे एक मौका दो !



उसे जाते देख कर मुझे खुशी हो रही है, तुम इसका क्या करोगे ?
बाबाबू और उसके साथियों पर विद्रोह के लिये मुकदमें चलाये जायेंगे ।
डियाना ! क्या मैं तुम्हारे बच्चों को एक बार देख सकता हूं ?
ओह ! हां !
अति सुन्दर ! किसी न किसी दिन मेरे अपने भी ऐसे बच्चे होने चाहिये ।
डियाना, चीजों को छोड़ने की चिन्ता न करो, सब ठीक हो जायेगा
हां जरूर ! (काश मैं समझ सकती कैसे)



वायुयान डियाना के लिए तीन दिन में वापिस आ जायेगा, हम उसकी अमरीका की यात्रा का प्रबन्ध कर देंगे ।
मैं आपका धन्यबाद करता हूं परन्तु मैं इसमें प्रसन्न नहीं हूं ।
मैं समझता हूं, परन्तु मेरे नकाब पोश मित्र चिन्ता न करो । तुम दोनों के लिये सब कुछ ठीक हो जायेगा ।
FALK & BARRY 2/12
उससे उसका क्या मतलब था ?

क्रमशः

पृष्ठ ३३ से आगे

बंजर और उपजाऊ नहीं है। केवल १/३० वाँ भाग भूमि ही उपजाऊ है। हालाँकि कुछ ऊँचे पहाड़ों में अच्छे घास के मैदान हैं। सर्दियों में इन जगहों के मवेशियों को नीचे के गर्म भागों में लाना पड़ता है।

गर्म गल्फ स्टरीम नारवे के उत्तरी तट की ओर को बहती है और इस कारण नारवे के तट पर नरम मौसम रहता है जिसमें काफ़ी गर्म ग्रीष्म ऋतु तथा सर्दी में तापमान बस जमने के बिन्दू से कुछ ही नीचे पहुँचता है। वर्षा इस देश में बहुत होती है, कुछ पर्वतीय क्षेत्रों में २०० इंच तक वर्षा हो जाती है परन्तु पूर्वीय क्षेत्र में वर्षा केवल ३० इंच तक ही होती है।

गर्मियों के दिन बहुत लम्बे होते है तथा दूर के उत्तरी भाग में वर्ष में दो माह दिन रात सूर्य का प्रकाश फैला रहता है। यह माह हैं मई से ले कर जुलाई तक।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

पृष्ठ ४१ से आगे

हंसेगा ही नहीं तो दांत बाहर कैसे दिखाई देंगे ?'

उनकी बात सुनकर लोग ठहाका मार कर हंस पड़े। स्वयं लाला राम भरोसे भी अपनी बात को लोगों के द्वारा हंसी में उड़ाते देख, सरौता सिंह इसमें अपना अपमान अनुभव करते हुए, वहां से नाराज होकर चले आए।

घर लौटे तो घर में घुसते ही श्रीमती जी का सवाल उनके कानों में पड़ा, 'अजी कंघा ले आए कि नहीं ? नहीं लाए हो तो फौरन जाकर ले आओ मेरी इस डिमांड पर तुम्हारा सरौता नहीं चलेगा। डिमांड हल्की सुपारी नहीं, पत्थर है पत्थर···जाओ जल्दी, नहीं तो आज चूल्हा ठंडा ही पड़ा रहेगा। पहले बाल, फिर बाद में रोटी-दाल···'

मजबूरी देख सरौता सिंह जी कंघा खरीदने बाजार की ओर चल ही दिए।

जुराब एक वाई ब्रीफकेस

चैक चक्करम

पैसों के लेन-देन के लिए चैकों का प्रयोग होता है। जीवन के दूसरे क्षेत्रों के लेन-देन में भी चैकों का प्रयोग हो तो बहुत लाभ होगा। हर व्यक्ति के पास चैक बुक होगा। हर आदमी चैकों पर दस्तखत करने के स्वर्गीय आनन्द का भागी बनेगा। समय की बचत होगी और मुंह कम चलाना पड़ेगा जिससे खुराक में बचत होगी क्योंकि शरीर को कम कैलोरीज की आवश्यकता होगी। चैकों से हरे-भरे समाज की एक झांकी देखिये।



वायदों का चैक

जब प्रेमिका मिलेगी प्रेमी लम्बे-चौड़े वादों का बियरर चैक काट कर प्रेमिका के चरणों में पेश करेगा।

वफा का चैक



प्रेमिका भी पीछे क्यों रहे? वह भी अपने प्रेमी को जब तब अपनी वफाओं का चैक पकड़ाती रहेगी! चांद को गवाह बना कर, कसमें खाने की जरूरत नहीं रहेगी।

खेद का चैक



जब भी किरायेदार मकान मालिक को किराया समय पर नहीं दे पायेगा वह खेद का चैक काट कर पकड़ा सकेगा। मकान मालिक को एक चैक पाने की खुशी तो होगी।

गालियों का चैक



नल पर पानी के लिए दो महिलाओं में ठन जाये तो वह एक-दूसरे को गालियों का चैक पकड़ा देंगी। महाभारत भी हो गया और शोर भी नहीं मचा।

दुआओं का चैक



साधु, महात्मा लोग अपने भक्तों को दुआओं का चैक काट कर देंगे। चैक को ताबीज में बंद कर पहना भी जा सकेगा।

आश्वासनों का चैक



नेता लोग अपने इलाके की जनता को आश्वासनों का चैक काट कर देंगे। लोग यह नहीं कहेंगे कि खाली भाषण झाड़ कर दफा हो गया।

बहानों का चैक



पति देव रात को देर से घर लौटें तो पत्नी को बहानों का चैक काट कर पकड़ा दें और आराम से अन्दर जाकर सो जायें।

शिकायतों का चैंक



पड़ोसी एक-दूसरे को शिकायतों के चैंक बाई हैंड या बाई पोस्ट पकड़ा सकते हैं।

किचकिच का चैंक



पत्नी, पति के कान किचकिच करके नहीं खायेगी। किचकिच का चैंक काट कर देगीं।

गप्प का चैंक



पड़ोसिनें बैठकर घंटों गप्प बाजी में समय नष्ट नहीं करेंगीं। जी चाहा गप्पों का चैंक काट कर दरवाजे पर से ही पड़ोसिन को पकड़ा दिया।

आह का चैंक



प्रेमी दगा देकर दूसरी लड़की से शादी कर ले तो प्रेमिका अपनी आहों का खास चैंक भूतपूर्व प्रेमी को बाई रजिस्टर्ड पोस्ट भेजेंगी।

श्रद्धा का चैक



भक्तजन मन्दिरों में आरती करने की बजाय अपनी श्रद्धा का चैक काट कर भगवान के चरणों में अर्पित करेंगे।

अफवाहों का चैक



अफवाहें भी चैकों द्वारा फैलाई जा सकेंगी। लोग चुपचाप एक-दूसरे को अफवाहों के चैक पकड़ाया करेंगे। जितने का चैक मिला आगे वाले को उससे बड़ा चैक काट कर दे दिया।

उम्मीदों का चैक



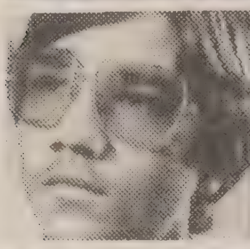
परीक्षा देकर आने पर परीक्षार्थी घर वालों को उम्मीदोका चैक काट कर देंगे। (फर्स्ट डिवीजन में आने की उम्मीद)।

शक का चैक

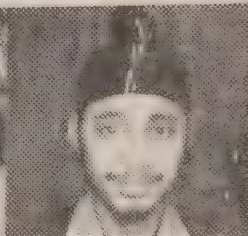


अगर शक हो कि नौकर दूध पर से मलाई उतार कर खा जाता है या सब्जी मे पैसे मार जाता है तो कहना कुछ नही पड़ेगा। मेम साहब महीने के अन्त में नौकर को शकों का

दीवाना फ्रेंड्स क्लब



मुकेश भटनागर 'निराला' तुलजा माता मंदिर के पास, भटनागर हाउस, किला चितौड़गढ़



गुरमीत सिंह मीता टी-५५, साउथ एक्सटैंशन-१, नई दिल्ली -४९ २१वर्ष पत्र मित्रता।



संजय मसीह दि सारनग क. लिमिटेड पत्रालय-मठौरा १५ वष मित्रता निभाना।



चन्द्र भूषण आजाद निम्वाल की गो. नं. ८ जफर ग्वा १८ वर्ष, मरे मुर्दे उखाड़ना



शशि भूषण ग्राम पो. बौरही पटना, १२ वर्ष दीवाना पढ़ना, गाना गाना, घोडे की सवारी करना।



सुरिन्दर मैदान महाबीर कलोनी १३/१०० लाडवा २०, वर्ष पत्र-मित्रता, प्यार करना।



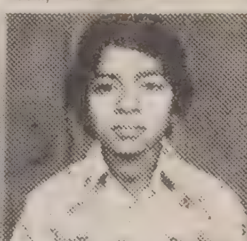
कृष्ण राज शाक्य द्वारा श्रेष्ठ न्यूज एजेन्सी शिटल पाती तानसेन पाल्पा १७ वर्ष, बीडियो देखना



दवेन्द्र कुमार पब्बी भगत गली १६/५० कपूरथला, प स्टेशन, घूमना, पत्र मित्रता।



संजय कुमार गुप्ता, श्रद्धानन्द रोड, रांची, बिहार, २० वर्ष फिल्में देखना तथा किताबें पढ़ना।



राकेश कुमार मरवाह, ६९८ २५ए नये डाकखाने के पास गांधी नगर, दिल्ली-३१, १४ वर्ष।



अरुन कुमार वार्ष्णेय, मानिक चौक, अलीगढ, १५वर्ष क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना आदि।



सुरेश चन्द्र सियाल, कालेज भीलवाड़ा (राजस्थान), २० बातें बनाना दूसरों को



दिनेश कुमार आर्य, नई बस्ती, रेवाड़ी, १८ वर्ष, फिल्म देखना, मोटर साईकल भगाना।



अश्वनी यादव, १६१/११ बाबू परवा, न्यू लेबर कालोनी, कानपुर, १२ वर्ष फिल्म देखना



संजय गुप्ता, वेद प्रकाश गुप्ता बड़ा चौक, १३ वर्ष, क्रिकेट, पत्र मित्रता फिल्में, घूमना।



प्रकाशनाथ गोयल, ३/७ भीम टोल, तानसेन पाल्पा, नेपाल, १ टिकट संकलन करना।

दीवाना फ्रैंडस क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।



जे के. रोमू, भारत साल्वेन्ट, शाहाबाद (म. प्र.) २० वर्ष, टीटू को प्यार करना।



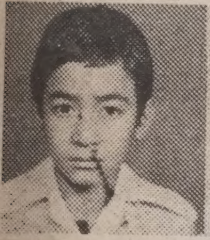
हिरा बहादुर प्रधान, ५/३सतुडगल, पाउ, काठमाण्डों, नेपाल, दीवाना पढ़ना, गरीब को सहयोग करना।



राजेश कृष्णानी, बैरनबाजार, रायपुर, १५ वर्ष, पत्र मित्रता।



मनोज अरोड़ा, स्यामसुन्दर अरोड़ा, जनता फ्रुट जुस, जालनमक्रेट १८ वर्ष, पत्र मित्रता।



ओम भक्त मास्के, ५१३९४ यंगल मंजेयोरी, १६ जुदो, किस्ना, दिवाना पढ़ना।



नसीम खाँ मोफरज, कविहार ८५४१०५, १७, पत्र-मित्रता फोटो-ग्राफी करना, सफेद कपड़ा पहनना।



जगबहादुर प्रतेल गांव सेंमखक बडान. ६ पो. लढिया जि. बागलुंग अं धौलागिर २२ वर्ष।



श्री राम कोमल ९२, रामदेव रोड़, पाली (राजः), २१ वर्ष, कविता लिखना, साहित्य पढ़ना।



केश निभ्भवन १२४/१७२७ ...नपुर, २० वर्ष पत्रमित्रता।



के. पी. सिंह चौहान, रायफल क्लब, नरेन्द्र नगर, टिहरी गढवाल, ३२ वर्ष, हाकी, मित्रता।



मनोज कुमार माखिजा, मदना-नाफ्लैट, मुजफ्फरपुर, १७ वर्ष दीवाना पढ़ना।



सुनील जे माथुर केस की हवेली के पास, जोधपुर, १६ वर्ष, फिल्में देखना, दीवाना पढ़ना।



...विन्दर सिंगमघेडा, १० तरसेम ...रल स्टोर, केम्प खावर हाउस, ...लाई, २० वर्ष, गानेगाना।



अनिल पाहवा, पाहवा ज्यूलरी सैंटर, गली नं. १२, मोंगा, पंजाब, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली ११०००२.

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ साफ लिखें।

नाम ....

....

पता ....

....

आयु .... शौक ....

...ज प्रैस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
...बन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।


आदिमानव
आ हा हा हा हां
ऊ.......... एब्सल्यूटली फैन्टैस्टिक !
ZING!
WEEE
SWING
पाषानी तू इतनी देर से कहां
ऊ.... मम्मी, मैंने बताया तो था । ओबेराय घाटी में फैशन शो देखने गयी थी । ऐसे-ऐसे डिजाइन की खालें पहन जानवर माडल स्टेज पर आए कि सांस थम गयी । डैडी से कह कर उनमें से एक का शिकार जरूर करवाऊंगी ।



पूनम ढिल्लो छाया: अमिता देशमुख

दीवाना

पूनम ढिल्लों-कुमार गौरव की तेरी कसम

नम ढिल्लों उन अभिनेत्रियों में से एक हैं न्होंने अपनी प्रथम फिल्म से ही अलग हचान बना ली। पंजाब की रहने वाली नम ढिल्लों को सर्वप्रथम अभिनय करने का ौका फिल्म 'त्रिशूल' में मिला

'त्रिशूल' में छोटी सी भूमिका पूनम ढल्लों ने बड़ी सुन्दरता से निभाई दर्शकों को नम का मासूम चेहरा मन भाया।

इसके बाद नूरी फिल्म में पूनम फारूख़ ख के साथ बाकायदा नायिका के रूप में र्दे पर आई और सफलता पाई। 'नूरी' की सफलता इसलिये भी उल्लेखनीय है क्योंकि इस फिल्म के नायक नायिका तो नये ए ही, निर्देशक की भी यह पहली फिल्म ी। मनमोहन कृष्ण हिन्दी फिल्मों के जाने ने चरित्र अभिनेता रहे हैं लेकिन निर्देशक के प में 'नूरी' मनमोन कृष्ण की पहली फिल्म ी।

'नूरी' की सफलता के बाद पूनम ढिल्लों की मांग फिल्मों में बढ़ी लेकिन पूनम ने फिल्मों की गिनती के बजाये फिल्म की कहानी और अपने रोल पर ध्यान दिया और नपसन्द फिल्में साइन कीं।

पूनम ढिल्लों की लोकप्रियता की यह जीती जागती मिसाल रही कि तामिल में बनी फिल्म रीजाकक्कल' के हिन्दी करण रैड-ोज़' में इन्हें राजेश खन्ना जैसे बड़े स्टार के साथ बतौर नायिका लिया गया.

रैडरोज' की सफलता से राजेश खन्ना को भी सहारा मिला और पूनम ढिल्लों को भी आगे बढने का मौका मिला।

हाल ही में 'लवस्टोरी' की सफलता के बाद कुमार गौरव और विजयता की जोड़ी के चर्चे चले लेकिन निर्माताओं ने कुमार गौरव के साथ पूनम ढिल्लों को अपनी फिल्मों में साइन करना आरम्भ किया।

पिछले दिनों निर्माता टोनी ने अपनी फिल्म तेरी कसम' में नायक कुमार गौरव के साथ नायिका पूनम ढिल्लों को साइन किया एक तरफ जहां इस फिल्म के इसलिये चर्चे हुऐ क्योंकि यह नई जोड़ी बनी, दूसरी तरफ शबाना आजमी के कारण निर्माता को फिल्म की कास्ट बदलनी पड़ी

वास्तव में निर्माता ने विज्ञापनों में कुमार गौरव व पूनम ढिल्लों का नाम मोटे अक्षरों में लिखवाया तथा शबाना आजमी का नाम साधारण कास्ट में लिखा गया। शबाना आजमी इस बात पर नाराज हुई कि पूनम ढिल्लों जैसी नवोदिता का नाम उससे पहले कैसे आया। शबाना वास्तव में अच्छे स्तर की अभिनेत्री है और पूनम ढिल्लों से सीनियर है।

निर्माता को अपनी इस भूल का तब पता चला जब नियत शूटिंग दिवस पर शबाना नहीं पहुंची। निर्माता उसका पता करने उसके घर पहुंचा तो शबाना ने फिल्म में काम करने से इंकार कर दिया।

बताया जाता है कि पूनम ढिल्लों ने निर्माता से कहा था कि वह शबाना जी का नाम मोटे अक्षरों में दे दें लेकिन बात नहीं बनी और मामला बढ़ गया। पूनम ढिल्लों जिस तेजी से आगे बढ़ रही है उसे देख कर यह कहा जा सकता है कि आने वाले कल की चर्चित नायिकाओं में इनका नाम होगा।

विजय भारद्वाज

दीवाना